अल-क़ाएम अल मुन्तज़र

(अ.त.फ़.श.)

MRP Rs.15/-

शअ़्बानुल मोअ़ज़्ज़म सन १४४४ हि.

ख़ुसूसी शुमारा

अमीरुल मोअ्मेनीन हज़रत अ़ली इब्ने अबी तालिब अ़लैहेमस्सलाम,
हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के बारे में फ़रमाते हैं:

वोह (इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम) ख़ाहिशात को हेदायत का पाबन्द करेंगे जब लोग हेदायत को ख़ाहिशात के ज़ेरे असर क़रार दे रहे होंगे.....फिर वोह तुम्हें दिखलाएँगे कि आ़दिलाना सीरत क्या होती है और क़ुरआन-ओ-सुन्नत को किस तरह नई ज़िन्दगी अ़ता की जाती है।

(नहजुल बलाग़ा, ख़ुत्बा १३८)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम व सल्लल्लाहो अ़लैका या वलीयल अ़स्र (अ़ज.) अदरिकना

यल्ग़ार

येह एक ऐसा लफ़्ज़ है जो गोश गुज़ार होते ही ऐसा लगता है जंग का मैदान सज गया है। दोनों तरफ़ लश्कर के सिपाही, तबले जंग बजते ही एक दूसरे पर टूट पड़ेंगे। लेकिन एक आवाज़ सबसे पहले मैदान से उठती है और वोह है, "यल्ग़ार"।

अगर अम्बिया और औसिया अ़लैहिमुस्सलाम जिनका सिलसिला हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से शुरूअ़ हुआ और आज तक वोह सिलसिला क़ाएम है उसकी तारीख़ का जाएज़ा लिया जाए और अ़क़्ल-ओ-ख़ेरद और इन्साफ़-ओ-अ़द्ल की रोशनी के तह्त ग़ौर-ओ-फ़िक्र करें तो मुशाहेदात का सिलसिला भी आईनादारी कर रहा है कि तकवीने आ़लम से दो सफ़ें सीना ताने एक दूसरे के मुक़ाबिल में खड़ी ही नहीं हैं बल्कि ज़बरदस्त हमला कर रही हैं और जंग के तमाम अस्बाब का ज़ख़ीरा दोनों के पास है जिनसे वोह हमलावर होते हैं। बज़्मे मलाएका के सामने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का पुतला था, फ़रमाने एलाही सादिर हुआ कि जैसी ही इसमें रूह फूँकी जाए सब उनके सामने सज्दा रेज़ हो जाना। जब रूह फूँकी गई सब हुक्मे एलाही के मुताबिक़ सज्दे में गिर गए इल्ला इब्लीस। बाज़ पुर्स पर इब्लीस सीना तान के अपने ख़ालिक़ के सामने आ गया और जवाब दिया, "मैं इससे अफ़ज़ल हूँ। मेरी तख़्लीक़ आतिशी है और येह आदम की तख़्लीक़ ख़ाकी है।" जब मर्दूद हुआ और बज़्म से निकाला गया तो उसने कहा था मैं ता क़यामत उसकी नस्ल को गुमराह करूँगा। (गोया इस ज़मीन को उन्हीं के ख़ून से रंग दूँगा)।

इब्लीस का पहला क़दम

अ़ल्लामा इक़बाल ने इसी तनाज़ुर के तह्त अपनी ज़बान में एक ख़ाके की शक्ल में येह कहा कि ख़ुदा फ़रमाता है :

जहान रा ज़ीक आब-ओ-गुल आफ़रीदम, तू ईरान-ओ-तातार-ओ-ज़ंग आफ़रीदी
मन अज़ ख़ाले पूलाद नाब आफ़रीदम, तू शमशीर-ओ-तीर-ओ तफ़न्ग आफ़रीदी
तबर आफ़रीदी नेहाले चमन रा, क़फ़स साख़्ती ताएरे नग़मे ज़न रा

फ़ेहरिस्त

यल्ग़ार १
इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से मअ़नवी लगाव ६
हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के अन्सार में ख़वातीन का किरदार ११
इन्तेज़ारे अ़द्ले एलाही १६
अ़कीदए महदवीयत पर "राबेतए आ़लमे इस्लामी" का तहक़ीक़ी जवाब २१
अस्मा-ओ-अल्क़ाबे हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम २५

(मैंने येह जहान एक ही पानी और मिट्टी से पैदा किया था, तूने इसमें ईरान-ओ-तूरान-ओ-हबश बना लिए; मैंने ख़ाक से ख़ालिस फ़ौलाद पैदा किया था, तूने उससे शमशीर-ओ-तीर-ओ-तोप बना लिए; तूने इससे चमन के दरख़्त काटने के लिए कुल्हाड़ी बना ली, नग़मा गाते हुए परिन्दों के लिए क़फ़स बना लिया)।

अल्लामा इक़बाल की फ़िक्र इसी इब्लीसी यल्ग़ार के मफ़ाहीम की एक झलक या ख़ुलासा है जो हमें तारीख़ बतला रही है। जिस तरह हक़ इस अर्ज़े ख़ाकी पर जल्वागर होता रहा उसी तरह एक बहुत बड़ा लश्कर उस पर यल्ग़ार करता रहा। क़ादिरे मुत्लक़ ने इसी बज़्मे मरक़ूम में कहा था **"तू मेरे नेक बन्दों को कभी गुमराह नहीं कर सकेगा"**। येह बात इब्तेदा की है लेकिन इब्लीस का सफ़र हर गाम पर हंगामा ख़ेज़ रहा।

तारीख़ निशानदेही कर रही है कि पहला क़दम इब्लीस का क़ाबील का शक्ल में उठा जिसने हाबील का क़त्ल भी किया और उसकी लाश को काँधे पर लिए गश्त गुराज़ करता रहा और आख़िर में उसकी लाश सिपुर्दे ख़ाक कर दी।

दूसरा क़दम

आदमे सानी नूह अलैहिस्सलाम पर पत्थर की बौछार होती रही। आप की क़ौम पर जब इब्लीस की यल्ग़ार ने बहुत ज़्यादा ज़ोर पकड़ा था, सिर्फ़ एक सैलाब तूफ़ान की शक्ल में आया जिसने पिसरे नूह को भी नहीं छोड़ा। वोह यल्ग़ारे इब्लीसी जिसने अक़्ले इन्सानी को अपने शिकन्जे में जकड़ रखा था उसका हिसार टूट गया और एक नई दुनिया की मख़्लूक़ात ने सुकून की साँस ली।

तीसरा क़दम

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए मिन्जनीक़ तैयार हुई और नमरूद की जलाई हुई आग का ज़ोर जब तारीख़ में पढ़ते हैं तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इस नमरूदी यल्ग़ार में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की हक़ परस्ती और नबूवत के इब्लाग़ की ज़िम्मेदारियों की बेना पर आग की फ़ितरत बदल गई और एक दिल दहलाने वाली आग और उसके शोअ्ले महकते हुए गुलज़ार में तब्दील हो गए।

चौथा क़दम

इब्लीस की यल्ग़ार और उसका सिलसिला कब रुकने वाला था। जब जनाबे हाजरा अलैहस्सलाम ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के गले में रस्सी का निशान देखा और वाक़िफ़े हाल हो गईं तो ऐसा सदमा और ग़म-ओ-अन्दोह में मुब्तेला हुईं कि जाँ बर न हो सकीं और वोह सदमा जान लेवा साबित हुआ।

पाँचवा क़दम

इब्लीस की यल्ग़ार अर्ज़े ख़ाकी पर फैल रही थी। फ़िरऔन का लश्कर एक तबाही की तरह ऐसा सामने आया जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तमाम हक़ परस्ती के इब्लाग़ को लम्हों में बहा ले जाता। हक़ तआला वोह क़ुदरत है जो हर शै पर ग़ालिब है। बक़ौले लेसानुल्लाह मौलाए काएनात अली इब्ने अबी तालिब अलैहेमस्सलाम के **"अल्लाहुम्म इन्नी अस-अलोक...बे जबरूतेकल्लती ग़लब-त बेहा कुल्ल शै"**, दरियाए नील में बारह रास्ते बन गए और जब फ़िरऔन का लश्कर इसमें दाख़िल हुआ तो सब रास्ते बन्द होकर पूरे लश्कर को ग़र्क़े आब कर दिया। और इबरत के लिए फ़िरऔन की लाश को दरियाए नील की मौजों में बाक़ी रखा।

छटा क़दम

जनाबे मरियम अलैहस्सलाम पर यल्ग़ार हुई और इब्लीसियत के परस्तारों ने मजबूर समझ कर हज़रत मरियम अलैहस्सलाम से पूछा येह बच्चा किसका है तो आप ने इशारे से कहा: "मैं हालते सौम में हूँ। इसी बच्चे से पूछ लो।"

महद से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की आवाज़ बलन्द हुई:

"बेशक, मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब अ़ता फ़रमाई है और मुझे नबी बनाया है।"

(सूरह मरियम, आयत ३०)

मज्मए इब्लीसियत का लर्ज़ा बरअन्दाम हुआ।

सातवाँ क़दम

क्या हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई, उस कुएँ में जिसकी गहराई से पानी नज़र नहीं आता था, आप अलैहिस्सलाम को फेंक कर मुत्मइन हो गए। वही यूसुफ़ अलैहिस्सलाम थे जिसने आपने भाइयों की हाजत रवाई की थी। पूरा वाक़ेआ हर सेराते मुस्तक़ीम पर चलने वाले मुसाफ़िर को मअ़लूम है।

क़िल्आ बन्दी

राक़िमुल हुरूफ़ ने क़ससुल अम्बिया के चन्द इब्लीसियत के यल्ग़ार के इक़्दाम का ज़िक्र इसलिए किया क्योंकि इब्लीसियत की यल्ग़ार हर अ़ह्द में अपनी कसरत को बढ़ाती रही और बढ़ाती रहेगी। लेकिन इसका ऊरूज और ज़वाल भी मद्दे नज़र है इसलिए कि हक़ परस्तों के ज़ेह्न में येह सवाल उभरता है कि आख़िर येह यल्ग़ार-ओ-अशरार का तूफ़ानी सिलसिला रोज़ ब रोज़ दुनिया के गोश-ओ-किनार से कब तक ज़ोर पकड़ता रहेगा और क्या हक़ परस्तों के लिए क़ादिरे मुतलक़ ने अस्बाब और अस्लहे भी फ़राहम कर दिए हैं या उन्हें ज़ुल्म-ओ-इस्तेब्दाद की चक्की में सिर्फ़ पिसता रहना मक़्दूर है। इससे पहले कि एक तारीख़ का जाएज़ा लें, इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम से इसी नज़रिए के तहत सवाल किया गया था कि आप हमारी हेदायत के लिए कुछ इर्शाद फ़रमाएँ।

इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"ला एलाहा इल्लल्लाह एक क़िल्आ है। जो इसके अन्दर दाख़िल हुआ वोह महफ़ूज़ रहेगा। लेकिन इसमें दाख़िल होने के कुछ शराएत हैं और उन तमाम शराएत की एक शर्त मैं हूँ।" (यअ़्नी एक शर्त इमामत है।)

वज़ाहत तलब गो नहीं है लेकिन बात यक़ीन की रोशनी में, इल्मे इमामत अज़ली है। इस जुम्ले में इमाम अलैहिस्सलाम के इल्म की एक ऐसी झलक नज़र आती है कि इब्लीसी यल्ग़ार और अशरार के तूफ़ान चाहे जितने तेज़ हों इस क़िल्आ के एहाते के क़रीब नहीं आ सकते।

और मज़्कूरा बाला बयान में येह पायए नबूवत तक क़ाएम है कि जब अशरार की तुग़यानी का पानी सर से बलन्द होने लगा तो किस तरह उसे ख़ुदावन्द मुतआल ने न सिर्फ़ पस्पा कर दिया बल्कि रौंद कर रख दिया।

मोह्लत

ख़ुदावन्द मुतआल ने जब मोह्लत दी तो उसका फ़ाएदा उठाते हुए येह तूफ़ान कहाँ रुकने वाले थे? मोह्लत एक मुद्दत पर मुन्हसिर है। मुद्दत यअ़्नी यल्ग़ारियते तूफ़ाने इब्लीसी जी भर के क़त्ल-ओ-ग़ारत के तमाम मन्सूबे तैयार करते रहें। एक वक़्ते मुअय्यन पर अपना अन्जाम देख लेंगे। इस मुद्दत में यल्ग़ारे इब्लीसी का सफ़र अ़ह्द ब अ़ह्द बढ़ता रहा लेकिन ख़ुदावन्द मुतआल ने इससे महफ़ूज़ और मसून रहने के लिए पहले ही कह दिया था कि: "तू हमारे नेक बन्दों पर कभी ग़ल्बा न हासिल कर सकेगा"। और इसके लिए हेदायत का मुकम्मल इन्तेज़ाम ज़ाहिर और पुर इसरार तौर पर कर दिया था। क़ौले एलाही है:

"यक़ीनन हम ने अपने रसूलों को वाज़ेह और रोशन दलाएल के साथ भेजा और उनके साथ किताब और मीज़ान को नाज़िल किया ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ाएम रहें।"

(सूरह हदीद, आयत २५)

ईमान वालों को अश्रार की ताक़तें जितना भी मुस्तज़्अफ़ कर दें इस क़िल्आ में वोह उनके यल्ग़ार से महफ़ूज़ रहेंगे और इस चन्द रोज़ा ज़िन्दगी में ख़तरात ख़ुद ब ख़ुद दम तोड़ते रहेंगे और आख़ेरत की तवील ज़िन्दगी की तअ्बीर उनके सामने होगी।

जब रेसालत के आख़री पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने हेदायत की तदवीन-ओ-तअ्लीम मुकम्मल कर दी तो फ़रमाया: "अब मेरे बअ्द मेरे बारह ख़लीफ़ा होंगे, जो मोअ्मेनीन, मुस्तज़्अफ़ीन, मोहसेनीन, सालेहीन और नेकूकारों के लिए पनाहगाह होंगे और उनकी हिफ़ाज़त करेंगे।"

इस्लाम की तारीख़ में बड़े बड़े तूफ़ान आए, नए उस्लूब, नए नए रंग, नए नए मन्सूबे, सेयासत गरी के नए रूप आए जिन्होंने बातिल हदीसों और रवायतों से हक़ीक़ी इस्लाम को पसे पर्दा लाने की नाकाम सई करने की कोई कसर उठा नहीं रखी लेकिन येह क़ौले रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम पत्थर की लकीर बनकर उभरता रहा। यहाँ तक कि यज़ीद लअ्नतुल्लाह अलैह ने भरे दरबार में एअ्लानन बयान दिया कि: "न कोई रसूल आया था और न कोई वही"। इसी दरबार में हज़रत ज़ैनब सलामुल्लाह अलैहा का ख़ुत्बा इस बात की दलील बनकर इस तरह गूँजा कि सुनने वाले कह रहे थे कि क्या अली अलैहिस्सलाम ज़िन्दा हो गए। येह फ़साहत-ओ-बलाग़त, येह लहजा तो ऐसा लग रहा है कि अली अलैहिस्सलाम बोल रहे हैं। येह ख़ुत्बा यज़ीद लअ्नतुल्लाह अलैह के बुतलान पर ऐसा तमाचा था कि न सिर्फ़ यज़ीद लअ्नतुल्लाह अलैह बल्कि सब मुईन-ओ-मददगार भी बौखला उठे। दरबारे शाम यल्ग़ार का सबसे बड़ा हादिसा था और इमामत के पाँव तले कुचला गया। कहना पड़ेगा कि ऐसे होते हैं वोह नुफ़ूस जो क़िल्अए एलाही में इज़्ने दुख़ूल की शर्त हैं।

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने शबे आशूर एक रात की मोहतल दी थी जिसका एक मक़सद उलमा बयान करते हैं येह भी था कि यज़ीद लअ्नतुल्लाह अलैह की फ़ौज में अगर कोई हक़ परस्त बच गया है तो वोह भी आ जाए। चुनाँचे बतहक़ीक़ जनाबे हुर अलैहिस्सलाम के अलावा भी कुछ और ज़वात हैं जिनकी तरफ़ इशारा किया है।

आलमी पस मन्ज़र सामने है और मोहलत की मुद्दत के तमाम होने के तमाम मनाज़िर सामने आ रहे हैं। तबाही, बर्बादी, ख़ूँरेज़ी, ग़ुर्बत, मुफ़लिसी इन्सानियत सोज़ मज़ालिम, बरहनगी, बरबरियत एक क़ौम दूसरी क़ौम पर टूट पड़ने पर आमादा, ऐश कोशी सब कुछ तो अपने उरूज की तरफ़ गामज़न है। इसके मुक़ाबिल में वोह तर्ज़े ज़िन्दगी जिसकी तअ्लीम ख़त्मुल मुर्सलीन ने दी थी वोह भी ज़िन्दा और ताबिन्दा है। गोया इन्सानियत और बशरीयत की अफ़ज़लीयत और आख़ेरत की नवीद चारों तरफ़ से आ रही है कि: "ऐ ख़ुदा के बन्दों! किताब और मीज़ान के दामन से वाबस्तगी ही तुम्हें ला एलाहा इल्लल्लाह के क़िल्आ में महफ़ूज़ रखेगी"। किताब कह रही है: **"बक़ीयतुल्लाहे ख़ैरुल्लकुम इन कुन्तुम मोअ्मेनीन"**।

येह दुनिया की आर्ज़ी ज़िन्दगी में मुत्लक़ुल एनानी की तरफ़ एक भारी अक्सरीयत जहाँ नेकूकारों पर यल्ग़ार समन्दरों से हवाओं से ज़मीन पर ग़ल्बा करने को हर तरफ़ से बड़े बड़े ख़तरनाक हाथियार ईजाद हो चुके हैं लेकिन अल्लाह की आख़री हुज्जत आख़री इमाम अलैहिस्सलाम जो अल्लाह तआला ने हमारी आख़ेरत को बचाने के लिए ज़मीन पर क़ाएम रखा है, वोह ग़ाफ़िल नहीं है। सूरह अल-हम्द को हर नमाज़ में हर रक्अत में दोहराते हैं लेकिन ग़ौर नहीं करते। वोह कौन हैं जो **अन्अम्ता, ग़ैरिल मग़ज़ूब,** और **वलज़्ज़ाल्लीन** की रोशन निशानियाँ हैं। सबको इमाम महदी अलैहिस्सलाम का यक़ीन है लेकिन इक़रार और इन्कार साथ साथ चल रहा है। बक़ौले

अल्लामा इक़बाल के :

सज्दा ख़ालिक़ को भी, इब्लीस से याराना भी

हश्र में किससे अज़ीदत का सिला माँगेगा ?

हम सबका हमारे अइम्मा अलैहिमुस्सलाम पर येह अक़ीदा है कि हर अह्द में वोह हमारे यक़ीन के आईने पर गर्द नहीं बैठने देते। येह हमारे उलमा और वोह ख़ुदा परस्त और हक़ परस्त पाकीज़ा नुफ़ूस हैं जिनको हर अह्द में हज़रत अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात का शरफ़ हासिल रहा है। एक लम्बी फ़ेरिस्त है जिनके पास आप अलैहिस्सलाम की तौक़ीआत आती रहीं या ख़ुद ब नफ़्से नफ़ीस आप अलैहिस्सलाम ने मिलने का शरफ़ दिया।

कैसे शुक्र के सज्दे अदा हों उस ख़ुदा के जिसके लिए दुआए मश्लूल में इर्शाद हो रहा है :

"ऐ मेहरबान! ऐ दोस्त! मुझे तंग घेरे से आज़ाद कर।"

हमारे रब, हमारे मालिक, हमारे ख़ालिक़, अल्लाह ने हमारे लिए इस दुनिया में पनाहगाह क़ाएम की, जिसकी बशारत दी हमारे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने येह हदीस बयान फ़रमा कर कि : "जब दुनिया ज़ुल्म-ओ-जौर से भर जाएगी, मेरे आख़री ज़ानशीन का ज़हूर होगा और वोह इस दुनिया को अद्ल-ओ-इन्साफ़ से इस तरह भर देगा जिस तरह वोह ज़ुल्म-ओ-जौर से भरी होगी"। वोह महदी आख़ेरुज़्ज़माँ अलैहिस्सलाम है। हाज़िर इमाम भी है, ग़ैबत की नक़ाब भी है। जब उनका ज़हूर होगा, ग़ैबत की नक़ाब चेहरए अक़्दस से हटेगी, नया सूरज तुलूअ् होगा, अनवार जल्वागर होंगे, रह्मत की बारिश होगी, मुख़ालेफ़ीन की गुमराही उन्हें अल्लाह की लअ्नत का मुस्तहक़ क़रार देगी और वोह अज़ाबे ख़ुदावन्दी में मुब्तेला होंगे। दुआए अह्द में है :

"अल्लाहुम्म अरेनित्तल्अतर्शीदत"

यल्गारियत तूफ़ाने नूह में डूबेगी, आतिशे नमरूद नहीं जलेगी, यज़ीदियत, ज़मीन के पत्थर हवाओं के ज़हर आलूद झोंके इस तरह जकड़ लेंगे कि जहन्नम पुकार उठेगी : "येह हमारे लुक़्मा हैं सज़ा देने के लिए"।

क़ारेईने केराम! राक़ेमुल हुरूफ़ की एक सइये ना तमाम से मतलूब है कि इस ज़माने में हर मोअ्मिन को फूँक फूँककर ज़िन्दगी बसर करने के लिए क़दम रखना चाहिए इसलिए कि यल्गारियत आतिशे नमरूद के तमाम साज़िशों को कान्धे पर लिए हुए इक़साए आलम में फैल रही है। जौहरी तन्सीबात से दुनिया लरज़ रही है। सियासतगीरी के पंजे ग़रीबों, मुफ़लिसों, नादानों और कमज़ोर लोगों की अक्सरीयत की तरफ़ उनका ख़ून चूसने के लिए बढ़ रहे हैं। ऐसा लगता है इन्सानियत के दम तोड़ने में ज़्यादा मुद्दत नहीं लगेगी। लेकिन वोह ख़ुदा वोह है जिसकी ज़ात लाशरीक है, जो क़ादिरे मुत्लक़ है और ख़ालिक़े काएनात है। उसने ऐसा क़िल्आ ज़मीन पर मज़बूत बुनियादों के साथ क़ाएम कर दिया है, जिसके दरवाज़े की कलीद क़ाएमे आले मोहम्मद अलैहिमुस्सलाम के हाथ में है। जो होश-ओ-क़रअत के साथ अपने आक़ा वलीये अस्र अलैहिस्सलाम के इशारों पर और हेदायतों के बयानात जो हमारे उलमाए बासेफ़ात हैं, हक़परस्त हैं, हमें आगाही देते रहते हैं और इसी ख़त पर हमारी क़ौम चलती रहेगी, हर तरफ़ से हर ज़ाविये से हमें हमारी क़ौम को ता सुब्हे ज़हूर महफ़ूज़ रखेगा। वोह वली हैं मफ़्तूहुल अबवाब के और वोह दलीलुल मुतहय्येरीन का मफ़हूम हैं, लेहाज़ा हर लम्हा, हर आन, हर शीआ को होशियार रहना चाहिए ताकि अन्दरूनी और बैरूनी साज़िशों की यल्गार से महफ़ूज़ रह कर अपनी आख़ेरत को रोशन और अन्जामे ख़ैर की तरफ़ गामज़न करें।

इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम से मअ़नवी लगाव

मरहूम शेख़ सदूक़ रिज़वानुल्लाह तआला अलैह ने अपनी गेराँक़द्र किताब "कमालुद्दीन व तमानुन नेअ़्मह" की जिल्द २, बाब ४३, में इब्राहीम बिन मह्ज़ियार की मुलाक़ात को इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम से ख़ुद उनकी ज़बानी नक़्ल किया है। इब्राहीम बिन मह्ज़ियार की कुनियत "अबू इस्हाक" थी इस लिए इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम ने उन्हें अबू इस्हाक से मुख़ातब किया है। इस मुलाक़ात में अबू इस्हाक और इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के दरमियान मुकालेमा है और जगह जगह दोनों गुफ़्तुगू करते नज़र आते हैं। इस तहरीर में हमारा मक़सद उनकी मुलाक़ात की तफ़सील बयान करना नहीं है बल्कि सिर्फ़ एक ख़ास हिस्से को क़ारेईन की ख़िदमत में पेश करना है।

इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम अपनी तूलानी गुफ़्तुगू को जारी रखते हुए फ़रमाते हैं :

"ऐ अबू इस्हाक! मेरे वालिद ने मुझ से फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे! जान लो कि बाख़ुलूस और मुतीअ़्-ओ-फ़रमाँबरदार लोग, उन परिन्दों की मानिन्द जो अपने आशियाने की तरफ़ लौटते हैं, बेताबी और इश्तेयाक़ के साथ तुम्हारी जानिब दौड़ते हैं।"

(कमालुद्दीन, जि.२, स.४४८)

ख़ुलूस-ओ-एताअ़त

इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की ताकीद पर ग़ौर करें तो मअ़लूम होता है कि ग़ैबत के ज़माने में शीअ़यान-ओ-मुन्तज़रीने इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम किस अख़्लाक़-ओ-एताअ़त-ओ-फ़रमाँबरदारी के साथ इमाम की जानिब रुख़ करेंगे। इमाम हसन अ़सकरी अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे से कहा और उसी बात को इमाम महदी अलैहिस्सलाम, इब्राहीम बिन मह्ज़ियार से कह रहे हैं कि जिस तरह एक परिन्दा अपने आशियाने की तरफ़ जाता है, उसी तरह बेताबी-ओ-इज़्तेराब और शौक़ के साथ, अह्ले इख़्लास और एताअ़त पेशा अफ़राद तुम्हारी जानिब रुख़ करेंगे।

सादिक़ुल क़ौल इमाम हसन अ़सकरी अलैहिस्सलाम का इल्मी बयान ऐसा होता है कि शर्ह करो तो उसकी रोशनी फैलती जाती है और समेटो तो इन्सान को हयाते नौ (नई) की ख़बर मिलती है। यहाँ इमाम अलैहिस्सलाम फ़रमा रहे हैं शौक़ के बारे में कि इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात का दीदार का शीअ़याने अ़ली अलैहिस्सलाम की क़ौम के अफ़राद में कितना शौक़ है, उसकी शिद्दत कितनी है, उसके दर्जात कितने हैं, उनके मरातिब क्या हैं। येह सब शौक़ की फ़र्द और फ़स्ल हैं। हमारे इमाम अलैहिस्सलाम वालेदुश्शफ़ीक़ हैं वोह हेफ़ाज़त करते हैं वोह नज़र रखते हैं वोह हमें उ़तूफ़त के अपने दामन में अपने साए में रखते हैं। हमारी नज़रों से ग़ाएब हैं येह मस्लेहते ख़ुदावन्दी है। शौक़ एक नफ़्सीयाती पह्लू को उजागर करती है। काश हमारा शौक़ इस्माईल हेरक़ली की तरह किसी मर्तबे का होता तो हम अपने इमाम अलैहिस्सलाम की ग़ैबत में उनकी ज़ियारत से महरूम न रहते। हमारा इमाम अलैहिस्सलाम वलीये अ़स्र है, वलीये ख़ुदा है। शौक़ मह्मेज़ हो तो हाजतमन्द ज़ियारत से मुशर्रफ़ हों। शौक़ एहसास की बुनियाद पर है। येह उसकी यक्सानियत हमागीरियत कमज़ोर न हो वरना पस्ती सामने है और महरूम मुक़ाबिल में हों।

इस मज़्मून को किताब **"पैवन्दे मअ़नवी बा साहते क़ुद्से मह्दवी (तकालीफ़ुल अनाम फ़ी ग़ैबतिल इमाम)"** से लिखा गया है। इस किताब के मुसन्निफ़ सदरुल इस्लाम "अ़ली अकबर हमदानी" हैं। आप का ज़मानए हयात सन

१२७० हि. ता सन १३२५ हि. यअ़्नी सन १८५३ ई. ता सन १९०७ ई. है। आप हमदान में पैदा हुए और वहीं इन्तेक़ाल किया। अलबत्ता अपने वतन में इब्तेदाई तअ़्लीम के बअ़्द नजफ़े अशरफ़ तशरीफ़ ले गए और छह साल हौज़ए इल्मिया नजफ़ में मुहद्दिस नूरी क़ुद्देस सिर्रहू, आक़ा सैयद मोहम्मद मुज्तहिद मूसवी नजफ़ी हिन्दी ताब सराह, जो कि शेख़ मुर्तज़ा अन्सारी रिज़वानुल्लाह तआला अलैह के शागिर्दों में से थे और मरहूम हाज मिर्ज़ा हुसैन राज़ी तेहरानी से कस्बे फ़ैज़ किया। बअ़्द में अपनी वालिदा के हमराह ईरान लौट आए और कुछ साल तेहरान-ओ-हमदान में तसनीफ़-ओ-इर्शाद-ओ-तअ़्लीम में मशग़ूल रहने के बअ़्द दोबारा नजफ़ आए लेकिन दो साल बअ़्द फिर हमदान लौट गए और वहीं इन्तेक़ाल किया। आप की तसानीफ़ बहुत हैं और बअ़्ज़ कई जिल्दों में हैं। ख़ुदा दर्जात को बलन्द करे।

इस मज़्मून के उन्वान की तरफ़ तवज्जोह की जाए, तो हम से तक़ाज़ा करता हुआ नज़र आता है कि ग़ैबत के ज़माने में हमारी ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं और उन्हीं ज़िम्मेदारियों की अदाएगी से हम अपने इमाम को राज़ी-ओ-ख़ुशनूद कर सकते हैं, उनसे मअ़्नवी राबेता क़ाएम कर सकते हैं, अपने वजूद में रूहानीयत-ओ-नूरानीयत पैदा कर सकते हैं। यही मअ़्नवी लगाव और राबेता हमारी दुन्यवी और उख़रवी ज़िन्दगी में नजात और कामियाबी का सबब है।

ज़िम्मेदारियों को तीन हिस्से में तक़्सीम किया गया है :

(१) ख़वास की ज़िम्मेदारियाँ

(२) अवाम की ज़िम्मेदारियाँ

(३) रुवाते अहादीस, हुक्काम, क़ुज़ात, फ़ुक़हा की ज़िम्मेदारियाँ

(१) ख़वास की ज़िम्मेदारियाँ

ख़वास की ज़िम्मेदारियों से मुराद इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के ख़ास अस्हाब और उनके महरमे असरार अफ़राद की ज़िम्मेदारियाँ हैं। रवायतों के मुताबिक़ हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम, हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम, हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम, हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम, हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम, हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम, और ज़मीन-ओ-आसमान के सरदार मलाएका और मुसलमानों और मोअ़्मिन जिन्नात के सरदार और अबा सालेह जो कि अजिन्ना के सरदारों में से एक है और सहरा और बयाबान में गुम होने वालों की हेदायत का ज़िम्मेदार है, उसी तरह हम्ज़ा नामी जिन जो दरिया में नजात दिलाने का काम करता है, उसी तरह अब्दुर्रहमान, अब्दुल क़ादिर, फ़क़तिश, अबू फ़र्दा, मस्तूर, रेयाह, क़ैस, और अबू मालिक हैं। इनसे कम दर्जे के जिन्न मुज्तहिद (नेहायत एबादत गुज़ार) हैं जैसे अबू अब्बास, अब्दुश्शहाब वग़ैरह। येह सब बड़े बड़े कामों पर मामूर हैं और हज़रत के हुक्म की तअ़्मील करते हैं।

इसी तरह नव्वाबे अर्बआ और ग़ैबते सुग़रा में जो दूसरे नाएबीन मुख़्तलिफ़ मुमालिक में थे, उन सब की अरवाह ख़व्वास में शुमार होती हैं।

इसी तरह वोह अश्ख़ास जो अज़ीम मर्तबे पर फ़ाएज़ थे जैसे शेख़ मुफ़ीद रिज़वानुल्लाह तआला अलैह और तीस (३०) नफ़र जो हमेशा आप अलैहिस्सलाम के हमराह होते हैं और उन्हें कोई नहीं पहचानता और दूसरे बहुत से अफ़राद, येह सब मुअय्यन-ओ-मख़्सूस ज़िम्मेदारी रखते हैं जैसे इत्तेलाआत का कश्फ़-ओ-कस्ब करना। इन इत्तेलाआत का दूसरों को जानना ज़रूरी नहीं है।[1]

१ इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के रहने की जगह ग़ैबते सुग़रा में नाएबीन ख़ास और मख़्सूस लोगों को मअ़्लूम थी और ग़ैबते कुबरा में सिर्फ़ उस ग़ुलाम को मअ़्लूम है जिसको आप की ख़िदमत का शरफ़ हासिल है लेकिन हम उनको नहीं जानते। रवायतों के लिए रुजूअ़् कीजिए किताब अल-काफ़ी, किताबुल हुज्जा, बाब फ़िल ग़ैबा।

(२) अ़वाम की ज़िम्मेदारियाँ

अ़वाम चन्द शोअ़बों में तक़्सीम हैं: कुछ लोग हैं जो हमेशा हज़रत के सामने हैं। ज़ाहिर है कि उनकी ज़िम्मेदारियाँ ग़ाएब हज़रात की ज़िम्मेदारियों से अलग हैं। येह हज़रात इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के ख़ुद्दाम और अह्ल-ओ-अ़याल हैं और हज़रत के काम करने वालों में हैं और हर रोज़-ओ-शब इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के अम्र के मुन्तज़िर-ओ-मुतरस्सिद हैं। येह हज़रात अपने लिए और दूसरों के लिए मख़्सूस ज़िम्मेदारियाँ रखते हैं। रवायतों में शायद उनके नाम इब्दाल, अवताद, रेजालुल ग़ैब, नुक़बा, और नुजबा आए हैं। शर्अ़ में भी उनके नाम हैं जैसे इब्दाल, औताद, सुय्याह (एबादत गुज़ार रोज़ादार), उ़ब्बाद, मुख़्लेसीन, ज़ोहाद, अह्ले जद्द और इज्तेहाद वग़ैरह।

(पैवन्दे मअ़्नवी बा साहत क़ुद्से महदवी, स.२४)

तज़क्कुर: तकालीफ़े अ़वाम ही में हमारी ज़िम्मेदारियाँ आती हैं जिसका तज़्केरा आगे ओएगा।

(३) रूवाते अह़ादीस, हुक्काम, क़ुज़ात और फ़ुक़हा की ज़िम्मेदारियाँ

रुवाते ह़दीस यअ़्नी ह़दीसों को बयान करने वाले। जहाँ तक रुवाते ह़दीस, हुक्काम, क़ुज़ात और फ़ुक़हा की बात है, तो इन सब की एक दूसरे की बनिस्बत मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारियाँ हैं। इन में से बअ़्ज़ उस मक़ाम तक पहुँचे हुए हैं कि इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम को पहचानते हैं और बिला वास्ता आप के वजूदे मुक़द्दस से फ़ाएदा उठाते हुए मसाएल के जवाब ह़ासिल करते हैं और हर वक़्त (ख़ाब या बेदारी में) हज़रत की इजाज़त-ओ-एनायत से हज़रत के हुज़ूर में शर्फ़याब (शरफ़याब) होते हैं।

एक बात और क़ाबिले तवज्जोह है कि बअ़्ज़ हज़रात रुवाते ह़दीस, हुक्काम, क़ुज़ात, और फ़ुक़हा के वास्ते से हज़रत से तवस्सुल का रास्ता रखते हैं और बअ़्ज़ हज़रात उनसे बग़ैर वास्ता और बग़ैर वसीले के हज़रत से बातिनन मिलने का रास्ता रखते हैं। और दूसरे लोग कभी भी न तो शख़्सी तौर पर और न ज़ाहिरी और बातिनी तौर पर हज़रत से नहीं मिल पाते मगर इमाम अलैहिस्सलाम की वेलायत-ओ-मोहब्बत-ओ-मवद्दत के क़ुबूल करने की सूरत में इम्काने मुलाक़ात है।

तवज्जोह: ज़मानए ग़ैबते कुबरा में जो लोग वाक़ेअ़ हुए हैं, मअ़्रेफ़ते इमाम के दरजात में मुख़्तलिफ़ मरातिब रखते हैं। और इन तमाम लोगों के लिए और तमाम अफ़राद जो ख़वास में शामिल हैं, उन सब के लिए वाजिब-ओ-मुशख़्ख़स ज़िम्मेदारियाँ हैं कि उन ज़िम्मेदारियों पर अ़मल करना चाहिए और ग़फ़लत-ओ-जेह्ल की वादी में सरगर्दां नहीं होना चाहिए, ताकि हज़रत के अल्ताफ़-ओ-इकराम और तवज्जोहात के साए में रहें।

(पैवन्दे मअ़्नवी बा साहते क़ुद्से महदवी, स.२५)

येह बात ख़ास तौर से ज़ेह्न में रहे कि ग़ैबते कुबरा में कोई भी किसी भी मन्ज़िल और दर्जे पर फ़ाएज़ हों, अपनी तरफ़ से किसी भी तरह की मुलाक़ात-ओ-दीदार का दअ़्वा नहीं कर सकता है। ग़ैबते कुबरा में मुलाक़ात और दीदार सिर्फ़ और सिर्फ़ इमाम अलैहिस्सलाम की एनायतों पर मौक़ूफ़ है, जो दअ़्वा करे वोह मोअ़्तबर नहीं है।

अलबत्ता मोअल्लिफ़ मोह्तरम मरहूम सदरुल इस्लाम अ़ली अकबर हमदानी क़ुद्देस सिर्रहू ने अपनी किताब **"पैवन्दे मअ़्नवी बा साहते क़ुद्से महदवी (तकालीफ़ुल अनाम फ़ी ग़ैबतिल इमाम)"** में तफ़सील के साथ साठ (६०) ज़िम्मेदारियों का तज़्केरा किया है। इस मुख़्तसर मज़्मून में सब के बयान करने की गुन्जाइश नहीं है लेहाज़ा यहाँ हम चन्द अहम ज़िम्मेदारियों की तरफ़ इशारा करेंगे।

पहली ज़िम्मेदारी: हर ज़माने में वजूदे हुज्जते एलाही पर अ़क़ीदा रखना वाजिब

इस ज़िम्मेदारी के साथ हुज्जते अ़स्र हज़रत महदी

अलैहिस्सलाम की मअ्रेफ़त और उनका अक़ीदा और ग़ैबते सुग़रा में नव्वाबे अर्बआ[1] पर अक़ीदा रखना भी वाजिब है। ग़ैबते कुबरा में **इन्नी जाएलुन फ़िल अर्ज़े ख़लीफ़तन**[2] की रोशनी में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़िल्क़त से क़यामत के बरपा होने तक या क़यामत के चालीस दिन बाक़ी रह जाने तक[3] ख़ुदा ने लोगों के लिए ज़मीन पर अपना जानशीन नस्ब किया है और किसी भी मौक़अ् पर ज़मीन हुज्जत से ख़ाली न होगी चाहे ज़ाहिर-ओ-मश्हूद हो या ग़ाएब-ओ-नाआश्ना ताकि लोगों को ख़ुदा पर तन्क़ीद-ओ-ईराद का बहाना न मिले।

अगर आज के लोग कहें कि हमारे लिए कोई हुज्जत ज़ाहिर-ओ-नातिक़-ओ-मश्हूद-ओ-मल्मूस नहीं है, येह सुख़नें बातिल है। पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने अपने वक़्ते रेहलत एक दस्तूरुल अमल दिया है कि उनके बअ्द, उम्मते मरहूमा इस पर किस तरह अमल करे। इसी तरह हज़रत अमीरुल मोअ्मेनीन अलैहिस्सलाम और एक एक करके उनके औसिया अलैहिमुस्सलाम, जो कि हर ज़माने में **"हुजजे क़ाहेरए बाहेरए एलाहिया"** रहे हैं, अपनी उम्मत के लिए दस्तूरुल अमल मुअय्यन फ़रमाया। यहाँ तक कि हज़रत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम की शहादत आ पहुँची, और आप ने ख़ास कर अपने बअ्द की हुज्जत के लिए एक दस्तरुल अमल मरहमत फ़रमाया। अपने फ़र्ज़न्द हुज्जत बिन अल-हसन अल-असकरी अलैहेमस्सलाम को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम की तरह कमसिनी की उम्र में मर्तबए इमामत-ओ-वेलायत पर फ़ाएज़ किया। मुलाहेज़ा फ़रमाएँ सनदे सहीह से शेख़े सेक़ा मोहम्मद बिन उस्मान अम्री क़ुद्देस सिर्रहू की ज़बानी, आप फ़रमाते हैं :

"हसन बिन अली अलैहेमस्सलाम ने एक रोज़ अपने बेटे मोहम्मद महदी सलवातुल्लाह अलैह को हमारे सामने पेश किया और हमें उस वजूदे मुक़द्दस को दिखाया। हम चालीस लोग थे जो आप के ख़ानए अक़दस पर आए थे। हज़रत हसन असकरी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि येह मेरा बेटा, मेरे बअ्द तुम्हारा इमाम-ओ-पेशवा है और मेरी जानिब से तुम पर ख़लीफ़ा है। इसके हुक्म की तअ्मील करो और मेरे बअ्द मुन्तशिर-ओ-मुतफ़र्रिक़ न हो और और दूसरी राह पर मत जाना कि हलाक हो जाओगे। और आज के बअ्द से तुम अब मोहम्मद महदी को न देखोगे।"

(कमालुद्दीन, बाब ४३, स.४३५, ह.२)

लेहाज़ा पहली ज़िम्मेदारी इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम पर और उनके वजूदे मुक़द्दस पर और ग़ैबते सुग़रा में मुअय्यन कर्दा नाएबीने ख़ास पर अक़ीदा रखना है।

दूसरी ज़िम्मेदारी : सोने से पहले के आदाब

मिनजुम्ला ज़िम्मेदारियों में से एक ज़िम्मेदारी सोने से पहले कुछ अअ्माल अन्जाम देना है। दिन और रात, हर वक़्त इन्सान को इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की रज़ा-ओ-ख़ुशनूदी के अमल अन्जाम देना चाहिए और हर वक़्त मअ्नवीयत के हुसूल के लिए कोशाँ रहना चाहिए जैसा कि ज़ियारते जमेआ कबीरा में हम येह इक़रार करते हैं :

"...अपने तमाम अह्वाल-ओ-उमूर में अपनी तलब-ओ-हाजात-ओ-इरादा के मुक़ाबिल, आप को मुक़द्दम करने वाला हूँ।"

(ज़ियारते जामेआ कबीरा, मफ़ातीहुल जेनान, तर्जुमा उर्दू अज़ अल्लामा ज़ीशान हैदर जवादी, स.१००६)

इस जुम्ले से साफ़ ज़ाहिर है कि अपने हर अमल-ओ-इरादा में इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम को मुक़द्दम रखना चाहिए।

---

१ नव्वाबे अर्बआ के बारे में एसोसीएशन ऑफ़ इमाम महदी अलैहिस्सलाम की जानिब से शाएअ् कर्दा किताब नव्वाबे अर्बआ रुजूअ् करें।

२ सूरह बक़रह, आयत ३०

३ अल-काफ़ी, किताबुल हुज्जा, बाब इन्नल अज़्ला तख़्लू मिन हुज्जा, स.१७८

अब ज़रा तवज्जोह फ़रमाएँ दुआए कुमैल के इस जुम्ले पर कि किस तरह हम अपने लिए दिन रात ख़ुदा की याद में बसर करने की तमन्ना करते हैं :

"ऐ मेरे रब! सवाल करता हूँ तुझ से तेरी क़ुद्दूसियत और तेरे हक़ के ज़रीए.... कि दिन और रात में जुम्ला औक़ात अपनी याद से मअ़मूर कर दे, अपनी ख़िदमत की मुसलसल तौफ़ीक़ अ़ता कर, मेरे अअ़माल को अपनी बारगाह में मक़बूल क़रार दे ताकि मेरे तमाम औराद सब फ़क़त तेरे लिए हों और मेरे हालात हमेशा तेरी ख़िदमत के लिए वक़्फ़ रहें...."

(फ़िक़्रात दुआए कुमैल, मफ़ातीहुल जेनान, स.११९-१२०)

ग़फ़लत से बेदारी

कितने ख़ुश क़िस्मत हैं वोह लोग कि जिनकी येह दुआ क़बूल होती है और वोह ख़ुदा की याद से हमेशा मअ़मूर होते हैं और उसकी ख़िदमत की मुसलसल तौफ़ीक़ भी हासिल करते हैं और ख़ुद को उसके लिए वक़्फ़ कर देते हैं।

ख़ुदाया हमें भी ऐसी तौफ़ीक़ अ़ता कर और उसकी हुज्जत हज़रत महदी अलैहिस्सलाम से मअ़नवी राबेता और लगाव की तौफ़ीक़ मरहमत कर।

रातें दुआओं के लिए बेहतरीन औक़ात में शुमार की जाती हैं। एक मुन्तज़िर को रात में सोने के वक़्त क्या करना चाहिए कि अपने इमामे वक़्त से मुलाक़ात कर सके। इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने बहुत सादा-ओ-आसान तरीक़ा बयान किया है। फ़रमाते हैं :

"जो भी सोने से पहले मुसब्बहाते[१] क़ुरआन को पढ़े, वोह नहीं मरेगा यहाँ तक कि हज़रत क़ाएम (अ़ज्जलल्लाहो फ़रजहू) को दर्क करे और अगर मर जाए तो वोह जवारे पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम में होगा।"

(अल-काफ़ी, जि.२, स.६१९, ह.३)

तवज्जोह : वाक़ेअन, क्या ख़ुश क़िस्मत हैं वोह लोग जो इस अ़मल के पाबन्द हैं और अपने इमामे वक़्त को दर्क करते हैं।

तीसरी ज़िम्मेदारी : बेदारी के वक़्त के आदाब

जब ख़ाब से बेदार हों, सबसे पहले पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की पैरवी करते हुए शुक्रे ख़ुदा करें। इमाम जअ़फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम जब बेदार होते तो यूँ फ़रमाते थे :

"शुक्र उस ख़ुदा का जिसने मेरी मौत के बअ़द मुझे ज़िन्दा किया और उसकी बारगाह में उठाए जाने वाले हैं।"

(अल-काफ़ी, जि.२, स.५३८, ह.१६)

फिर इमामे अ़स्र अलैहिस्सलाम को याद करो और तीन मर्तबा कहो :

"ऐ इमामे वक़्त! आप पर ख़ुदा का दुरूद-ओ-सलाम हो। हम्द है उस ख़ुदावन्द मुतआ़ल की जिसने आप की और आप के आबा-ओ-अज्दादे ताहेरीन की वेलायत-ओ-मोहब्बत के साथ एक नई ज़िन्दगी अ़ता की।"

तवज्जोह : क्या क़िस्मत पाई है उन लोगों ने जो नमाज़े शब के लिए बेदार होते हैं और इन अज़्कार को बजा लाते हैं और इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम और तमाम चहारदा मअ़सूमीन अलैहिमुस्सलाम से अपने मअ़नवी-ओ-रूहानी राबेते का इज़्हार करते हुए दीगर एबादात-ओ-अज़्कार में मशग़ूल हो जाते हैं।

आज की चकाचौंध दुनिया में कुछ ही लोग हैं जो इन ज़िम्मेदारियों को बजा लाते हैं और अपने इमामे वक़्त से मख़्सूस राबेता और लगाव रखते हैं। ख़ुदाया! हमें भी ऐसा तौफ़ीक़ मरहमत कर और साहते क़ुद्से महदवी में इसी तरह के मअ़नवी राबेते से हमकिनार कर।

---

१ मुसब्बहाते क़ुरआन - सात सूरह हैं क़ुरआन में, सूरह इस्रा (बनी इस्राईल), सूरह हदीद, सूरह हश्र, सूरह सफ़, सूरह जुमुआ, सूरह तग़ाबुन और सूरह अअ़ला। येह सब लफ़्ज़ "सब्बह" या "योसब्बेहो" या "सुब्हान" से शुरूअ़ होते हैं।

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के अन्सार में ख़वातीन का किरदार

ख़वातीन, ज़िन्दगी का लाज़्मी जुज़ हैं। उनकी ज़रूरत और असरात सिर्फ़ इज़्दवाजी ज़िन्दगी तक महदूद नहीं हैं। ज़िन्दगी के हर एक शोअ्बे में ख़वातीन का किरदार नेहायत अहम और मोअस्सर है।

ख़वातीन जहाँ एक तरफ़ घर को सँवार कर रखती हैं वहीं पूरे मआशरे को भी सँवारती हैं। उनकी आग़ोश मदरसा है, स्कूल है, कॉलेज है, यूनिवर्सिटी है, तरबियत गाह है, किरदार साज़ी का कारख़ाना है। बलन्द तरीन मायए नाज़, क़ाबिले फ़ख़्र-ओ-मुबाहात शख़्सीयतों की बुनियाद इसी आग़ोश में रखी गई है। बहादुर, मुजाहिद, जानफ़रोश, जाँबाज़, दिलेर, शुजाअ्, सब इसी आग़ोश के परवर्दा हैं। इन्क़ेलाब की लौ इसी आग़ोश से फूटती है। दुनिया के तमाम मुवर्रेख़ीन, उलमा, मुहद्देसीन, फ़ुक़हा, शोअरा, साइन्सदाँ, मुहक़्क़ेक़ीन, सियासतदाँ, हुक्मराँ, बादशाह, सब इसी आग़ोश के मरहूने मिन्नत हैं। मुख़्तसर येह कि इन्सानी तारीख़ में ख़वातीन का किरदार मर्दों से कम नहीं....अलबत्ता दुनिया के तमाम ज़ालिम-ओ-जाबिर क़ातिल, दहशतगर्द, फ़सादी..... भी इसी आग़ोश से निकले हैं।

इस्लामी तारीख़ में ख़वातीन का किरदार बहुत नुमायाँ है उनकी क़ुर्बानियाँ, इख़्लास, ईसार, फ़ेदाकारी बहुत ही नुमायाँ है। क़ुरआन करीम और तारीख़ ने चन्द ख़वातीन के किरदार को ख़ास तौर से बयान फ़रमाया है। जैसे:

१) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालेदा

२) आसिया बिन्ते मुज़ाहिम - ज़ौजए फ़िरऔन

३) जनाबे मरियम - हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वालेदा

४) जनाबे हाजरा - हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की वालेदा

५) मलिका बिल्क़ीस

६) उम्मुल मोअ्मेनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा सलामुल्लाह अलैहा - ज़ौजए हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम

७) जनाबे फ़ातेमा बिन्ते असद सलामुल्लाह अलैहा - वालेदए हज़रत अमीरुल मोअ्मेनीन अलैहिस्सलाम

८) हज़रत फ़ातेमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा - सैयदतुन्नेसाइल आलमीन

९) जनाबे ज़ैनबे कुबरा सलामुल्लाह अलैहा - शरीकतुल हुसैन अलैहिस्सलाम

१०) जनाबे नरजिस ख़ातून सलामुल्लाह अलैहा - वालेदए हज़रत हुज्जत अलैहिस्सलाम

ख़वातीन की एक तवील फ़ेहरिस्त है जिनको इस्लाम में अहम मन्ज़ेलत हासिल है और जिन्होंने इस्लाम की और ख़ास कर अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम के लिए अज़ीम ख़िदमात अन्जाम दी हैं।

एक अहम सवाल

क्या हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के ख़ासुल्ख़ास ३१३ अस्हाब में ख़वातीन भी शामिल हैं या नहीं? इस सवाल के दो जवाब हैं :

(१) उ़मूमी जवाब

(अ) दुनिया की कोई तहरीक ऐसी नहीं है जिसमें ख़वातीन शामिल न रही हों और उन्होंने नुमायाँ कारनामा अन्जाम न दिया हो।

(ब) दीने इस्लाम ने मर्द और औरत दोनों को एक साथ ज़िम्मेदार क़रार दिया है। इस्लाम के जुम्ला अहकाम अपने शराएत के साथ मर्द और औरत दोनों पर वाजिब हैं जैसे नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, ख़ुम्स - सब पर वाजिब है। अम्र बिल मअ्रूफ़ और नही अज़ मुन्कर जैसी अहम ज़िम्मेदारी के तअल्लुक़ से इर्शादे ख़ुदावन्दी है :

"मोअ्मिन मर्द और मोअ्मिन औरतें एक दूसरे के दोस्त हैं येह नेकियों का हुक्म देते हैं और बुराइयों से रोकते हैं। नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात अदा करते हैं, ख़ुदावन्द मुतआल और उसके रसूल की एताअ़त करते हैं। इन लोगों पर अल्लाह रह्म करेगा यक़ीनन ख़ुदावन्द मुतआल इज़्ज़त और हिकमत वाला है।"

(सूरह तौबा, आयत ७१)

सूरह अहज़ाब की आयत ३५-३६ में इस तरह इर्शाद होता है :

"यक़ीनन मुसलमान मर्द मुसलमान औरतें, मोअ्मिन मर्द मोअ्मिन औरतें, एताअ़त गुज़ार मर्द एताअ़त गुज़ार औरतें, सहीह बोलने वाले मर्द और सहीह बोलने वाली औरतें, साबिर मर्द और साबिरा औरतें, ख़ुदातर्स मर्द और ख़ुदातर्स औरतें, मिस्कीनों मोहताजों का ख़याल रखने वाले मर्द और मिस्कीनों और मोहताजों का ख़याल रखने वाली औरतें, रोज़ादार मर्द और रोज़ादार औरतें, पाक दामन मर्द और पाक दामन औरतें, ख़ुदा की बहुत याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें, ख़ुदावन्द मुतआल ने इन सबके लिए मग़फ़ेरत और अज्रे अज़ीम आमादा कर रखा है।

और किसी भी मोअ्मिन मर्द और मोअ्मिन औरत को येह हक़-ओ-एख़्तेयार हासिल नहीं है जब ख़ुदा और उसका रसूल कोई फ़ैसला कर दें कि वोह अपनी तरफ़ से किसी राय का इज़्हार करें और जो भी ख़ुदावन्द मुतआल और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा वोह खुली हुई गुमराही में होगा।"

इन आयतों में ख़ुदावन्द मुतआल ने मर्दों के शाना ब शाना औरतों का तज़्केरा किया है। इससे वाज़ेह होता है कि दीने मुक़द्दसे इस्लाम में औरतों की ज़िम्मेदारी और उनका किरदार किसी भी सूरत में मर्दों से कम नहीं है।

हज़रत वलीये अस्र अलैहिस्सलाम का ज़हूरे पुरनूर तमाम इस्लामी तअ्लीमात का अमली ज़हूर होगा। तो क्योंकर मुम्किन है इस आलमी ज़हूर और आलमी हुकूमत में ख़वातीन शामिल न हो। ज़हूरे पुरनूर के लिए ज़मीन हमवार करना जिस तरह मर्दों की ज़िम्मेदारी है उसी तरह औरतों की भी ज़िम्मेदारी है। हज़रत वलीये अस्र अलैहिस्सलाम के तअल्लुक़ से जिस क़द्र मर्दों की ज़िम्मेदारी है उतनी औरतों की भी ज़िम्मेदारी है। ज़िम्मेदारियाँ एक तरह की हैं, ज़िम्मेदारियों का मैदान अलग अलग है। एक का मैदान मैदाने जेहाद है, एक का मैदान घर में

सिपाहियों, फ़ेदाकारों और जाँनेसारों की तरबियत है।

(२) ख़ुसूसी जवाब

इन उमूमी दलीलों के बावजूद रवायतों में येह बात बयान की गई है कि हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के लश्कर में ख़वातीन भी होंगी। इस रवायत पर तवज्जोह फ़रमाएँ:

जनाबे जाबिर जोअ्फ़ी ने हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ एक ज़रा तूलानी हदीस फ़रमाई है। हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के वक़्ते ज़हूर के हालात बयान करते हुए इमाम अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"और वोह तशरीफ़ लाएँगे उनके हमराह तीन सौ और कुछ लोग होंगे जिनमें ५० औरतें होंगी येह हज़रात बग़ैर किसी क़ब्ली वअ्दे के मक्का में इस तरह जमअ् हो जाएँगे जिस तरह ख़ेज़ाँ में हवा के ज़रीए पत्ते दरख़्त के नीचे जमअ् हो जाते हैं। एक दूसरे के शाना ब शाना होंगे। येह है इस आयत का मतलब जिसमें ख़ुदावन्द मुतआल फ़रमाता है:

"तुम जहाँ भी रहो ख़ुदावन्द मुतआल तुम सबको एक जगह जमअ् कर देगा यक़ीनन ख़ुदावन्द मुतआल हर एक चीज़ पर क़ुदरत रखता है।"

(सूरह बक़रह, आयत १४८)

उस वक़्त आले मोहम्मद अलैहिमुस्सलाम का एक फ़र्द आवाज़ देगा येह वोह जगह है जिस के बाशिन्दे ज़ालिम हैं फिर वोह मक्का से तशरीफ़ ले जाएँ तीन सौ और कुछ लोग उनके हमराह होंगे मक़ामे इब्राहीम और हज्रे असवद के दरमियान उनके दस्ते मुबारक पर बैअ़त करेंगे। उनके पास रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम का अ़ह्द नामा होगा। उनका परचम उनका अस्लहा और उनका वज़ीर उनके हमराह होगा। उस वक़्त मक्का में आसमान से एक मुनादी नेदा उनके नाम और उनके प्रोग्राम से सदा देगा जिसको तमाम अह्ले ज़मीन सुनेंगे।"

(तफ़सीरे अयाशी, जि.१, स.२५)

येह हदीस साफ़ तौर से बयान कर रही है कि हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के हमराह पचास ख़वातीन होंगी।

इस रवायत के अलावा और भी मुतअद्दिद रवायतें हैं जिनमें हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के इब्तेदाई अस्हाब की तअ्दाद ३१३ बयान की गई है। येह वोह मुन्तख़ब और बरगुज़ीदा अफ़राद होंगे जो ज़हूर के इब्तेदाई वक़्त में उनके हमराह होंगे। जिस वक़्त वोह ज़हूर फ़रमाएँगे येह ३१३ अफ़राद उनके हमराह होंगे येह अफ़राद यक़ीनन बहुत ही अअ्ला अरफ़अ् सेफ़ात के हामिल होंगे। उनका अअ्माल, अख़्लाक़, किरदार बहुत ही बलन्द होगा। फिर रफ़्ता रफ़्ता अस्हाब की तअ्दाद में एज़ाफ़ा होगा। हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से जब इन ३१३ अफ़राद की ख़ुसूसियात दरियाफ़्त की गई तो इमाम अलैहिस्सलाम ने इस तरह उनकी बअ्ज़ सेफ़ात बयान फ़रमाई हैं:

"उन लोगों को ज़मीन के गोशा-ओ-किनार में तलाश करो उनकी ज़िन्दगी बहुत सादा-ओ- आसान है। येह एक जगह मुस्तक़िल तौर पर क़याम नहीं करते हैं। लोगों के दरमियान रहें तो पहचाने नहीं जाते अगर नज़र न आएँ तो लोग उनकी ख़बर नहीं लेते हैं। अगर बीमार हों तो लोग अयादत नहीं करते हैं। अगर रिश्ता माँगे तो लोग उनसे शादी नहीं करते और अगर दुनिया से रुख़्सत हो जाएँ तो लोग तशीअ् जनाज़ा नहीं करते। येह अपने

अमवाल से दूसरों की मदद करते रहते हैं, क़ब्रों में एक दूसरे की ज़ियारत करते हैं, मुख़्तलिफ़ शहरों में रहने के बावजूद उनके नज़रियात एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ नहीं हैं।"

(ग़ैबते नोअ्मानी, स.२०३)

एक बार और अर्ज़ करते हैं कि मुख़्तलिफ़ रवायतों में हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के इब्तेदाई अस्हाब की तअ्दाद अस्हाबे बद्र की तरह ३१३ है।

एक सवाल ज़ेह्न में येह आता है कि जिन ५० ख़वातीन का ज़िक्र किया गया है येह ५० ख़वातीन उन ३१३ अस्हाब में शामिल है या येह ५० ख़वातीन उन ३१३ अफ़राद से अलग हैं। इस तरह रवायत का मतलब येह होगा जिस वक़्त हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम ज़हूर फ़रमाएँगे, उस वक़्त उनके हमराह ३१३ मर्द होंगे और ५० ख़वातीन होंगी यअ्नी उस वक़्त तमाम अस्हाबे ख़ास की तअ्दाद ३६३ होगी। रवायत के ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ इसी बात को बयान कर रहे हैं इस सूरत में हो सकता है कि इन ५० ख़वातीन के तमाम सेफ़ात और ख़ुसूसियात कुछ और होंगे। यक़ीनन येह ५० ख़वातीन भी ईमान-ओ-अख़्लाक़-ओ-अमल-ओ-किरदार में बहुत बलन्द दर्जे पर फ़ाएज़ होंगी।

येह भी हो सकता है कि येह ५० ख़वातीन उन्हीं ३१३ अफ़राद में शामिल हैं। इस तरह ज़हूर के वक़्त हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के हमराह २६३ मर्द होंगे और ५० ख़वातीन। इस सूरत में येह ख़वातीन ईमान-ओ-अमल और दीगर सेफ़ात में मर्दों के हम पल्ला होंगी, इस सूरत में येह बहुत ही बलन्द मर्तबा ख़वातीन होंगी।

लेकिन बात येह है कि रवायत में ३१३ का जो लफ़्ज़ इस्तेअ्माल किया गया है वोह "रजुल" या "रजुलन" है और रजुल का ज़ाहिरी मफ़हूम "मर्द" होता है। अब ज़रा देखते हैं लुग़त में लफ़्ज़ "रजुल" के क्या मअ्ना बयान किए गए हैं। आया येह लफ़्ज़े "रजुल" हमेशा औरतों के मुक़ाबले मर्दों के लिए इस्तेअ्माल होता है या येह लफ़्ज़े "रजुल" शुजाअ् और बहादुर के मअ्ना में भी इस्तेमअ्माल होता है चूँकि आम तौर से जंगों में मर्दों की शुजाअत सामने आती है इसलिए इन बहादुरों को "रजुल" कहा जाता है।

"ताजुल ऊरूस मिन जवाहेरिल क़ामूस", लुग़त की मोअ्तबर किताब है। इस किताब में "रजुल" की वज़ाहत इस तरह की गई है :

"और कभी "रजुल" एक सेफ़त होती है जिससे शिद्दत और कमाल मुराद लिया जाता है।"

क़ुरआन करीम सूरह बक़रह की आयत २३९ में "रेजाल" पैदल सिपाहियों के मअ्ना में इस्तेअ्माल हुआ है :

"अगर दुश्मन का ख़ौफ़ हो तो पियादा पा या सवार नमाज़ अदा करो।"

इस बेना पर हो सकता है ३१३ रजुल का जो ज़िक्र रवायतों में है उससे सिर्फ़ मर्द मुराद न हों बल्कि इससे बहादुर और शुजाअ् मुराद हो इस सूरत में **"फ़ीहिम ख़म्सू-न इम-रअत"** (इन में पचास ख़वातीन होंगी) इन ३१३ की वज़ाहत और तफ़सील है।

सूरह जिन की आयत ६ में इस तरह है :

"इन्सानों के मर्द जिन्नातों के मर्दों से पनाह तलब करते थे।"

सब जानते हैं कि जिन्नात में सिर्फ़ मर्द नहीं होते औरतें भी होती है ऐसा नहीं कि जिन्नात की औरतें मर्दों की तरह असर न रखती हों। यहाँ "रेजाल" का इस्तेअ्माल "जिन्स" के लिए हुआ है जिसमें मर्द और औरत दोनों शामिल हैं।

हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से रवायत है:

"क़ाएम अलैहिस्सलाम के हमराह १३ औरतें होंगी। रावी ने दरियाफ़्त किया: उनका क्या काम होगा? फ़रमाया: वोह ज़ख़्मों का इलाज करेंगी और बीमारों की तीमारदारी करेंगी। जिस तरह रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के ज़माने में था।"

(इख्बातुल हुदात बिल नसूस वल मोअ्जिज़ात, जि.५, स.२०३)

एक और रवायत में इसी तरह १३ ख़वातीन का ज़िक्र है इसमें भी इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि येह ख़वातीन बीमारों की तीमारदारी करेंगी। इस रवायत में उन ख़वातीन के नाम भी ज़िक्र किए गए हैं। रवायत के रावी "मुफ़ज़्ज़ल बिन उमर" ने जब उन ख़वातीन के नाम दरियाफ़्त किए, इमाम अलैहिस्सलाम ने येह नाम बयान फ़रमाएँ:

"रूशैद अल-हजरी की दुख़्तर "क़िन्वा"; उम्मे ऐमन; हबाबतुल वालेबीया; अम्मार यासिर की वालेदा सुमैया; हारून की ज़ौजा ज़ुबैदा (हारून को जब उनके शीआ होने का इल्म हुआ तो उनको तलाक़ दे दी जैसे फ़िरऔन की ज़ौजा आसिया); उम्मे ख़ालिद; उम्मे सईद; सुबाना; उम्मे ख़ालिद।"

(माख़ज़ साबिक़)

येह नौ ख़वातीन वोह हैं जो दुनिया से गुज़र चुकी हैं। येह रवायत जहाँ हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के अस्हाब में ख़वातीन की शुमूलियत को बयान कर रही है वहाँ येह भी वाज़ेह कर रही है कि जब हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का ज़हूर होगा उस वक़्त सिर्फ़ मर्दों की रजअत नहीं होगी बल्कि औरतों की भी रजअत होगी। इमाम अलैहिस्सलाम ने चार औरतों का नाम नहीं बताया शायद इस वजह से येह ख़वातीन आइन्दा ज़माने से मुतअल्लिक़ हों। येह भी हो सकता है कि इमाम अलैहिस्सलाम ने इस बेना पर ४ (चार) का ज़िक्र इसलिए नहीं किया आइन्दा आने वाली ख़वातीन अपने ईमान-ओ-अमल, किरदार-ओ-अख़्लाक़ से उन सआदतमन्द ख़वातीन में शामिल हो सकती हैं। रवायत में ५० ख़वातीन का ज़िक्र है इमाम अलैहिस्सलाम ने सिर्फ़ ९ (नौ) का तज़्केरा किया है ४१ औरतों का नाम नहीं लिया है येह भी औरतों को इस बात की तरफ़ मुतवज्जेह करता है कि वोह भी ईमान-ओ-अमल से उन ३१३ में शामिल हो सकती हैं। बहरहाल येह बात वाज़ेह है जिस वक़्त हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम ज़हूर फ़रमाएँगे ख़वातीन भी उनके हमराह होंगी।

(येह मक़ाला रेसाला "अल मौऊद", शुमारा ७, जमादिल आख़िर सन १४४० हि. के मक़ाला "दौरूल मिरअत फ़िल क़यामिल महदी" से अख़ज़ किया गया है)। ख़ुदा क़ुबूल फ़रमाए। आमीन।

इन्तेज़ारे अ़द्ले एलाही

मोहतरम-ओ-मोअज़्ज़िज़ मुन्तज़रीने इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम वोह बलन्द मक़ाम लोग जो दिन-ओ-रात अपने आक़ा-ओ-मौला के इन्तेज़ार में पल्कों को जुम्बिश दिए बग़ैर अपने साहेबुल अम्र की याद में मुज़्तरिब हैं। और लगातार अश्कबार आँखों से अ़म्रे एलाही की उल्फ़त में और वोह भी इस क़द्र चाहत के साथ कि कब उन साहेबुज़्ज़मान के हमरकाब होकर जामे शहादत को नोश फ़रमाएँगे। वोह आशिक़ाने मोइज़्ज़ुल मोअ्मेनीन कि जो रोज़े ईदुल फ़ित्र, ईदे क़ुर्बान, रोज़े ईदे ग़दीर और रोज़े जुमुआ, नुद्बा करके शोर-ओ-गिरिया बलन्द करते हैं और बारगाहे इमाम अलैहिस्सलाम में गिड़गिड़ा कर येह इल्तेजा करते हैं कि मौला काश कोई ऐसी सबील हो कि जिससे आप की ज़ाते अक़दस तक रसाई मुम्किन हो सके। ख़ुदा ऐसे मुन्तज़ेरीन को सलामत रखे जो ऐसे पाक और मुख़्लिस एहसास को लिए बारगाहे इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम में फ़ौज़े अकबर पर फ़ाएज़ हैं।

अ़द्ले एलाही का इन्तेज़ार ख़ुद बोल रहा है कि इस अर्ज़े ख़ाकी पर इन्सान दो हिस्सों में बँटे हुए हैं। एक वोह जो सितमगरी का पहाड़ बन गए हैं और अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ के ख़िलाफ़ अपनी तलवार को नेयाम से बाहर ले आते हैं। और दूसरे वोह सब मज़्लूम ग़रीब कमज़ोर फ़ुक़रा जो अल्लाह की हेदायत और निज़ाम के तहत चल रहे हैं। उन पर हमेशा ज़ुल्म-ओ-सितम की यूरिश के तहत अपनी हुकूमत क़ाएम करते रहते हैं।

इस फैली हुई दुनिया में बहुत वुस्अत थी वोह वक़्त जब क़ाबील, हाबील की लाश को लेकर चल रहा था और सोच रहा था इसका क्या करें। एक तरफ़ अ़दालत का बानी हाबील और दूसरी जानिब क़ाबील जो अपने काँधों पर अपने किए गए ज़ुल्म-ओ-सितमगरी का बोझ उठाए फिर रहा था। तग़य्युराते ज़माना ने दोनों पहलूओं की अ़क्कासी की एक तरफ़ हादिए बरहक़ की सिलसिला शुरूअ़ हुआ तो दूसरी जानिब ज़ुल्म-ओ-सितम का सैलाब भी उमडता चला गया।

ज्यों ज्यों दुनिया तरक़्क़ी की तरफ़ बढ़ती गई ज़ुल्म-ओ-जौर का अन्धेरा और घना होता चला गया। लेकिन इस घने अन्धेरे में भी वोह दिल जो ईमान की शम्अ़ दिल में जलाए बैठे हैं उनके लिए एक सीधा और रोशन रास्ता वाज़ेह नज़र आता है।

क़ुरआन करीम में परवरदिगार का इर्शाद है :

"यक़ीनन हम ने अपने रसूलों को वाज़ेह और रोशन दलाएल के साथ भेजा और उनके साथ किताब और मीज़ान को नाज़िल किया ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ाएम रहें।"

(सूरह हदीद, आयत २५)

इस आयत में परवरदिगार ने वाज़ेह किया कि हम ने रसूलों को भेजा वाज़ेह और रोशन निशानियों के साथ और किताब और मीज़ान को, उस कसौटी को कि जिससे तुम पहचान सको, देख सको, अ़क़्ल को रोशन कर सको और येह सब इसलिए कि तुम एक पुर अम्न ज़िन्दगी बसर कर सको। येह आयत और इस मज़्मून के तहत हम येह बयान करना चाहते हैं कि अ़द्ले एलाही ने तमाम अस्बाब तो मुहय्या कर दिए हैं लेकिन जो इस रास्ते पर चल रहे हैं वोह अपने दिल में येह हौसला रखें, मुस्तक़िल मिज़ाजी और शुजाअ़त से काम लें और एक बेहतरीन मुआशरे के इन्तेज़ार में रहें। क्योंकि मायूसी और नाउम्मीदी कहीं उसे

येह सोचने पर मजबूर न कर दे कि क्या वाक़ई अद्ले एलाही का निज़ाम क़ाएम होगा। लेहाज़ा परवरदिगार इस आयत के ज़रीए येह यक़ीन दिला रहा है कि किताब और मीज़ान दोनों अभी बाक़ी हैं और अद्ले एलाही का एह्तेमाम इस दुनिया में अभी क़ाएम होना बाक़ी है।

इन्तेज़ार और इमामे अस्र अलैहिस्सलाम की तरफ़ मुतवज्जेह होना येह एक इन्फ़ेरादी अमल भी है और इज्तेमाई भी। याद रहे कि हर वोह फ़र्द या जमाअत जो इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के हक़ को पहचाने और ख़त्ते वेलायत पर क़दम बढ़ाए और ख़ुद को इस एहसास के साथ कि जिसका इन्तेज़ार करना है वोह जामेअ् जहानिए एलाही जो इस रूए ज़मीन पर इस वक़्त ख़ुदा के वाहिद बरगुज़ीदा बन्दे हैं जो सबब हैं तमाम रूए ज़मीन पर की जाने वाली एबादतों की क़ुबूलियत का उनका इन्तेज़ार करके ख़ुद की बलन्दी और पायए कमाल तक पहुँचने के रास्ते को हमवार कर रहा है।

लेकिन इस दौलते करीमा कि जो **"बाबुल्लाहिल्लज़ी मिन्हो यूता"** है उस तक रसाई हासिल करने के लिए दअ्वये इन्तेज़ार में सदाक़त की चाश्नी ज़रूरी है। तब कहीं जाकर पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की इस हदीस का मिस्दाक़ क़रार पाएँगे कि जिसमें आप मुन्तज़रीने इमाम अस्र अलैहिस्सलाम के बारे में फ़रमाते हैं :

"बशारत है उनके लिए जो मेरे अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम के क़ाएम को पाएँगे, उन के क़याम से पहले उनकी पैरवी करेंगे, उनकी ग़ैबत में उन पर और उनसे पहले जो अइम्मा अलैहिमुस्सलाम गुज़रें हैं उन पर ईमान रखेंगे और अल्लाह के लिए उनके दुश्मनों से बेज़ार रहेंगे और वोह लोग मेरे रफ़ीक़ और मेरी उम्मत के सबसे बाइज़्ज़त अफ़राद होंगे।"

(कमालुद्दीन, जि.१, स.२८६)

यअ्नी अज़ीज़ाने ग़ैरामी, इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के मुक़द्दस इन्तेज़ार के पसे पर्दा कई इन्तेज़ार पिन्हाँ हैं जो कि ज़हूरे मुक़द्दसे इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के होते ही नुमायाँ हो जाएँगे।

इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम का इन्तेज़ार सिर्फ़ इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम का इन्तेज़ार नहीं है बल्कि अद्ले एलाही का इन्तेज़ार है, अहकामे ख़ुदावन्दी के नाफ़िज़ होने का इन्तेज़ार है, एहक़ाक़ुल हक़-ओ-इब्तालुल बातिल का इन्तेज़ार है।

जब हम दुआए इफ़्तेताह के इस जुम्ले की अदाएगी पर ग़ौर करते हैं, तो इल्म-ओ-हिकमत, फ़साहत-ओ-बलाग़त तारीख़ की आईनादारी और तिलावते क़ुरआन की रोशनी के कई दरीचे दरख़्शाँ हो जाते हैं। इसीलिए ठहर कर हम क़ारेईन केराम के लिए चन्द सुतूर रक़म करते हैं। इस दुआ के दो हिस्से हैं एक हिस्सा उस हुकूमते इस्लामी की रग़बत की दअ्वत देता है जिसमें सिर्फ़ ख़ालेसतन अद्ले एलाही का नुफ़ूज़ होगा जो मुस्तक़बिल की तरफ़ हमें दअ्वते फ़िक्र दे रहा है कि येह उसी वक़्त मुम्किन होगा जब हमारे आख़री इमाम अलैहिस्सलाम की हुकूमत होगी। दूसरा हिस्सा हाल और मुस्तक़बिल के दरमियान जो अर्सा गुज़रा है और जो गुज़रेगा, इसमें नेफ़ाक़ इस तरह से भरा होगा जिसकी मिसाल यूँ दे सकते हैं जैसे दुनिया एक पैमाना होगा और नेफ़ाक़ की शराब उसमें छलक रही होगी। इस दुआ की तअ्लीम उसने दी है जिसे हुज़ूरे सरवरे काएनात सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने आख़री मोहम्मद के इस्मे मुबारक से मौसूम किया है।

इशारा : हमारे उलमा ने बड़ी क़द्र काविश के साथ इस बात को साफ़ कर दिया है कि जो बयान दुआ की सूरत या किसी सूरत में मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम के ज़बाने मुबारक से अदा होंगे उसकी शर्ह क़ुरआन में मिल जाएगी। चुनाँचे हम जब क़ुरआन की तिलावत करते हैं तो

हमारे ज़ेह्न में आए इस एह्सास को जगाता है कि मेरा रसूल कितना अज़ीमुल मर्तबत था कि जिस का नाम मोहम्मद था। क़ुरआन में वारिद हो रहा है **"मा मोहम्मदुन इल्ला रसूलुन"** (मोहम्मद कुछ नहीं है मगर सिर्फ़ रेसालत ही रेसालत है)। यअ्नी उसकी सारी फ़ज़ीलतें रेसालत में पिन्हाँ हैं जिसके मअ्ना येह होते हैं कि अह्कामे ख़ुदावन्दी लेकर आए और उम्मत तक पहुँचा दिया। इस दुआ को पढ़ने के बअ्द फ़साह्त-ओ-बलाग़त की एक दिल में हुमक पैदा होती है कि हम सोचते हैं कि शिर्क और कुफ़्र के बजाए लफ़्ज़े नेफ़ाक़ क्यों रखा है। अह्लेबैते रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम को जो अज़ीयतें मुनाफ़िकों ने पहुँचाई हैं, उनके ख़िलाफ़ साज़िशें की हैं और जाल बुने हैं, उन सबका एक बड़ा सिलसिला सामने आ जाता है। चुनाँचे शाएर ने बड़े ही अच्छे अन्दाज़ में उसे बयान कर दिया है येह कह कर:

चूँ ख़ेलाफ़त रिश्ते अज़ क़ुरआँ गुसीख़्त

हुर्रियत रा ज़ह्र अन्दर काम रीख़्त

(ख़ेलाफ़त ने जब क़ुरआन से अपना रिश्ता तोड़ लिया, हुर्रियत-ओ-आज़ादी के जाम में ज़ह्र घोल दिया)।

इस दुआ की तम्हीद-ओ-तम्जीद के आईने में जाए ग़ौर-ओ-फ़िक्र है कि एक क़ौम है, मिल्लत है, मुआशरा है, जो इस भयानक और तूफ़ानख़ेज़ दरिया में अपनी कश्ती को उस रास्ते पर लिए जा रहे हैं जहाँ येह तमाम आफ़ात-ओ-मसाएब तह्तुश्शोआअ् में चले जाएँगे और कश्ती अद्ले एलाही के साहिल से हमकिनार होगी। और तब हम एक वादी में क़दम रखेंगे जहाँ उसकी हुकूमत होगी। जिसके लिए दुआ में है और दुआ का नतीजा भी बताता है कि एक ज़माना मुस्तक़्बिल का वोह होगा जब हमारे इमाम अलैहिस्सलाम के मुन्तज़ेरीन का बसेरा होगा।

इसीलिए दुआए इफ़्तेताह के आख़री हिस्से में परवरदिगार से हम येह कहते हैं:

"ख़ुदाया! हमें वोह दौलत-ओ-हुकूमते करीमा ए़नायत फ़रमा जिसके ज़रीए़ से तू इस्लाम और अह्ले इस्लाम को इज़्ज़त अ़ता करेगा।"

वोह इस्लाम कि पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने जिसकी ख़ातिर सख़्तियाँ बर्दाश्त कीं अपने और अपने अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम के पाक-ओ-ताहिर ख़ून से उसकी सिंचाई की, वही दीने इस्लाम ह़ज़रत के ज़हूरे पुरनूर के बअ्द तमाम अदियान पर ग़ालिब आएगा। यअ्नी इन्तेज़ारे इमाम अलैहिस्सलाम सिर्फ़ इन्तेज़ारे इमाम अलैहिस्सलाम नहीं है बल्कि ख़ूने आले मोहम्मद अलैहिमुस्सलाम से सींचे गए शजरे इस्लाम को सरसब्ज़-ओ-शादाब देखने का इन्तेज़ार है जिसके बअ्द काएनाते आलम में सिर्फ़ और सिर्फ़ एक क़ानून होगा और एक ही हुकूमत नाफ़िज़ होगी।

उम्मते वाहेदा वअ्एदए एलाही है और येह पूरा होकर रहेगा जिसकी तकरार परवरदिगारे आलम ने क़ुरआन करीम में बहुत से मक़ामात पर की है। और इस ताकीद के ज़ेरे असर येह बात भी वाज़ेह है कि येह इन्तेज़ार परवरदिगारे आलम का इन्तेज़ार है कि लोग कब आमादा होते हैं और फिर उसने वक़्ते मुअय्यन पर अपने वअ्दे को पूरा करना है अगरचे कुफ़्फ़ार और मुश्रेकीन को नागवार ही क्यों न गुज़रे।

इसीलिए सूरह अम्बिया, सूरह नूर, सूरह क़सस, सूरह साफ़्फ़ात और इसी तरह से दीगर सूरहाए क़ुरआन में मुख़्तलिफ़ आयतों के ज़रीए़ ज़हूरे इमाम महदी अलैहिस्सलाम की बशारत दी गई है और उसके साथ साथ आलमी हुकूमत का बयान है। इसी तरह अह्दीसे पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम में तमाम अस्नाद के साथ मोअ्तबर अह्दीस का एक सिलसिला है जो इस उम्मते वाहेदा के वुक़ूअ् पज़ीर होने पर दलालत करता रहा है। जिस पर येह ह़दीस जो कि

ख़ास्सा और आम्मा में मशहूर है कि :

"अगर इस दुनिया को ख़त्म होने में एक दिन भी बाक़ी रह जाएगा तो ख़ुदावन्द मुतआल उस दिन को इतना तूलानी करेगा कि वोह महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ज़हूर फ़रमाएँगे और तमाम दुनिया को अद्ल-ओ-इन्साफ़ से इस तरह भर देंगे जिस तरह वोह ज़ुल्म-ओ-जौर से भरी होगी।"

लेहाज़ा हक़ीक़ी मुन्तज़िर जो होगा वोह क़ौले ख़ुदावन्दी का पैरवकार और अहादीसे पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम पर अमल करने वाला होगा। इसीलिए वोह कभी इस वअ्दए एलाही का इन्कार नहीं करेगा हत्ता कि उसके बारे में शक से भी परहेज़ करेगा चूँकि उसके क़रीब किसी चीज़ को अगर दाएरए इस्लाम में दाख़िल है या नहीं मअ्लूम करना है तो वोह हर दम उसे क़ुरआन और अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम की अहादीस की रोशनी में देखेगा।

परवरदिगारे आलम जो कि क़ादिरे मुत्लक़ है जिसने ज़मीन का फ़र्श बिछाया और उस पर आसमान का शामियाना नस्ब किया, जो तमाम आलमीन का रब है जिसने इन्सान को ख़ल्क़ किया और उसके अन्दर हैरान कर देने वाली निशानियाँ रखीं, वोह परवरदिगार कि जो हर शै का इल्म रखता है और क़ादिरे मुतलक़ है हर उस मख़्लूक़ पर कि जो निगाहे इन्सानी में आयाँ भी है और नेहाँ भी है उस अलीम-ओ-हकीम के लिए क्या येह मुम्किन नहीं कि तमाम अस्बाबे ज़हूर मुहय्या कर दे और दुनिया का नेज़ाम यक्बारगी तब्दील कर दे ?

जी हाँ वोह कर सकता है लेकिन इसकी तौजीह भी ख़ुद अल्लाह तबारक व तआला ने इस तरह कर दी है कि अर्ज़े ख़ाकी पर जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया और इब्लीस ने बग़ावत-ओ-मुख़ालेफ़त की तो उसे मोह्लत दी और औलादे आदम को जब उसने बहकाने की क़सम खाई तो ख़ुदावन्द मुतआल ने इर्शाद फ़रमाया : **"हमारे नेक और सालेह बन्दों को तू कभी नहीं बहका सकेगा"**। इन्सान को ख़ुद मुख़्तार बनाना येह एक मशीयते एलाही के तक़ाज़ों में से एक तक़ाज़ा है। अगर बहकाने वालों के इमाम हैं तो हेदायत का उसने मुकम्मल इन्तेज़ाम कर दिया है। तारीख़ सिलसिले वार इस राह को रोशन करती रही और इसीलिए आख़री हादिये बरहक़ को ख़ुर्शीदे आलमताब से मिसाल दी और उसे बादल की नक़ाब की मिसाल दी जो ग़ैबत का एक पूरा मुकम्मल और जामेअ् फ़ल्सफ़ए हेदायते एलाही या दूसरे लफ़्ज़ों में क़यामे अद्ले एलाही का वअ्दा है और जो पूरा होकर रहेगा और क़ुरआन में कह दिया :

"अल्लाह का बक़ीया तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम ईमानदार हो।"

(सूरह हूद, आयत ८६)

लेकिन येह ग़ैबत और उसमें किया जाने वाला इन्तेज़ार दरअस्ल वोह कसौटी है कि जिसकी बुनियाद पर वोह एलाही हुकूमत की बुनियाद रखी जाने वाली है जो मुनाफ़ेक़ीन से पाक होगी ज़ालेमीन के शर से महफ़ूज़ होगी। वरना जिस तरह ख़ुदावन्द आलम के पसन्दीदा दीने इस्लाम की इब्तेदा और जिसके एअ्लाने अव्वल में ही मुनाफ़ेक़ीन ने अपने नज़रियात को पेश करके इस्लाम दुश्मनी का सबूत पेश किया और रोज़े अव्वल से ही दौलत और इक़्तेदार के भूखे बद-अख़्लाक़ी में मशहूर अफ़राद ने इसको तबाह करने की दिल ही दिल में मन्सूबा बन्दी शुरूअ् कर दी थी लेहाज़ा बअ्दे रेहलते पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम दीने इस्लाम का चेहरा ही बिगाड़ कर रख दिया जिसके ऊपर से नक़ाब हटाने की कोशिशों में गुलिस्ताने आले मोहम्मद अलैहिमुस्सलाम के कई फूलों को पामाल होना पड़ा। लेहाज़ा येह आख़री निज़ाम जो वअ्दए

एलाही के मुताबिक़ हत्मी है इसकी आज़्माइश भी कड़ी और मुख़्तलिफ़ है। और उसे वही दर्क करेगा जो दौरे ग़ैबते इमाम अलैहिस्सलाम में मुनाफ़ेक़त का दुश्मन होगा, अद्ले एलाही का क़ाएल होगा, अहकामे परवरदिगार का हामिल होगा, क़ुरआन को दोस्त रखता होगा, ख़ुश अख़्लाक़ी जिसके मिज़ाज की पहचान होगी। यही वोह संगे मील हैं जो इन्तेज़ारे अद्ल-ओ-अम्न की राह एख़्तेयार करने वालों के अन्दर नज़र आएँगी।

ग़ैबत एक इम्तेहान है जिसमें रवायतों के मुताबिक़ एक कसीर तअ्दाद गुमराह हो जाएगी सिवाए चन्द अफ़राद के कि जो इन्तेज़ार के मफ़हूम को सहीह मअ्नों में दर्क करते होंगे और येह इदराक उस यक़ीन के सबब पैदा होगा जो वअ्दए एलाही को हक़ जानते हुए होगा और उसका असर येह होगा कि वोह लोग हुज्जते ख़ुदा के पोशीदा होने के बावजूद अन्धेरों में रोशनी पर ईमान लाएँगे।

इसीलिए हक़ीक़ी मुन्तज़िर की अलग अहम्मीयत है। वोह बाइसे तअ्ज़ीम है कि उसका ईमान अम्रे एलाही पर सरे तस्लीम ख़म किए हुए है। चूँकि उसका इन्तेज़ार बज़ाहिर इन्तेज़ार है लेकिन हक़ीक़त में उसके इन्तेज़ार के पीछे यक़ीन है वअ्दए एलाही पर यक़ीन है इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के वजूदे अक़दस के हर जगह मौजूद होने पर जो अपने चाहने वालों की मुश्किल कुशाई करते हुए उन्हें गुमराही के अन्धेरों में हेदायत की रोशनी फ़राहम करते हैं। येह इन्तेज़ार सिर्फ़ इन्तेज़ार नहीं बल्कि ख़ुद मुन्तज़िर के अन्दर एक आलमी हुकूमत की तैयारी है। यही वरअ् और तक़्वा की तल्क़ीन देता है यही इन्तेज़ार **"अल मवद्द-त फ़िल क़ुर्बा"** का दर्स देता है। येह इन्तेज़ार मुतमस्सिक करता है क़ुरआन-ओ-अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम से। येह इन्तेज़ार उस दौलते करीमा की बारगाह में ले जाता है कि जिसके सबब इन्सान इस पुरआशोब ज़माने में भी उम्मीद की एक किरन महसूस करता है।

यहाँ हम अपने मज़्मून को इस बात पर पाए तकमील तक पहुँचाने की कोशिश करेंगे, हालाँकि इन्तेज़ार एक वसीअ् समन्दर है और मुन्तज़िर जब इसमें ग़ोताज़न हो जाता है तो उसके दर्जए ईमान को दर्क करना या उसकी वज़ाहत करना मुम्किन नहीं। इसीलिए पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और दीगर अइम्मा अलैहिमुस्सलाम ने इस हदीस को ताकीद के साथ बार बार बयान किया है :

"उम्मत का बेहतरीन अमल फ़रज का इन्तेज़ार है।"

दौरे ग़ैबत में इन्तेज़ार करना सिर्फ़ इन्तेज़ार करना नहीं बल्कि दर हक़ीक़त अस्ल मअ्नों में इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के वजूदे अक़दस पर यक़ीन, उनकी आदिलाना हुकूमत के क़याम और वअ्दए एलाही की गवाही देना है। इसका इन्कार गोया वअ्दए एलाही और हुकूमते एलाही का इन्कार है।

मिर्ज़ा दबीर ग़ैबत पर यक़ीन के बारे में बयान करते हैं :

अअ्माल की पादाश भरेंगे एक दिन
बे मौत मरे हैं मरेंगे एक दिन
जिनको है किसी वजूदे ग़ाएब पर शक
अल्लाह का इन्कार करेंगे एक दिन

जी हाँ, अज़ीज़ाने ग़ेरामी! क़ाएमे आले मोहम्मद अलैहिस्सलाम अभी मौजूद हैं। इन्तेज़ार उसकी आलमीयत और उसकी तरवीज और उस पर अमल पैरा होने वाले को हेदायत की एक ऐसी रोशनी दी गई है कि वोह तमाम मुश्किलात को झेल कर एक ऐसे मर्तबे पर फ़ाएज़ होगा जहाँ एक आलमी आदिलाना हुकूमत क़ाएम की जाएगी **"व लौ करेहल मुश्रेकून"**।

अ़कीदए महदवीयत पर "राबेतए आ़लमे इस्लामी" का तह़क़ीक़ी जवाब

पंद्रह शअ़्बानुल मोअ़ज़्ज़म २५५ हिजरी की वोह मुबारक सुब्ह़ थी जब ख़ुदावन्द आ़लम का आख़री हादी-ओ-रहनुमा इस दुनिया में तशरीफ़ लाया। यअ़्नी ह़ज़रत इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम के घर ह़ज़रत हुज्जत इब्निल ह़सन अ़सकरी अ़लैहेमस्सलाम की वेलादते बा सआ़दत वाक़ेअ़् हुई जिसे एक सौ बीस तारीख़दानों ने मिस्ले इब्ने ख़ल्कान ने "वफ़यातुल आ़यान" में और मोह़म्मद बिन यूसुफ़ गंजी अश्शाफ़ई ने "अल अख़बार फ़ी साहेबिज़्ज़मान" में नक़्ल किया है।

(दानिशमन्दाने आ़म्मा व महदी मौऊ़द, अ़ली दवानी)

गोया कि अ़क़ीदए महदवीयत यअ़्नी एक मुस्लेह़ का दुनिया को अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से भर देना न सिर्फ़ इस्लाम और तमाम अदियान ही में नहीं बल्कि फ़ितरते इन्सानी में पाया जाता है। लेकिन दीने मुक़द्दसे इस्लाम में इसे बड़ी अहम्मीयत हासिल है और चूँकि इस अ़क़ीदे के साथ ज़ुल्म-ओ-जौर के ख़ात्मे की ख़ुशख़बरी मुत्तसिल है लेहाज़ा ज़ालिम हुक्मरानों ने हमेशा से इस अ़क़ीदे में शक-ओ-शुब्हात डाल कर, मुद्दइयान को हवा देकर, मश्कूक और कमज़ोर करने की कोशिश की। इन्हीं शुब्हात में एक इस अ़क़ीदे को ख़ालिस शीआ़ अ़क़ीदा बताना बल्कि नऊ़ज़ोबिल्लाह अफ़साना क़रार देना है।

"राबेतए आ़लमे इस्लामी" एक आ़लमी इदारा है जहाँ सारी दुनिया के लोग राबेता क़ायम कर सकते हैं जिसका मरकज़ी दफ़्तर शह्रे मुक़द्दस मदीनतुन्नबी सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम में है। तक़रीबन १३९९ हिजरी में अबू मोह़म्मद नामी एक शख़्स ने कीनिया से अ़क़ीदए महदवीयत के इस्लामी होने और अह़ादीस नबवी के ह़िसाब से मुस्तनद-ओ-मुतवातिर होने के सिलसिले में **"राबेतए आ़लमे इस्लामी"** के दफ़्तर से राबेता क़ाएम किया। दफ़्तर के सरबराह मोह़म्मद अल-मालेह़ अल क़ज़्ज़ाज़ ने तस्रीह़न और ज़िम्मन जवाब दिया कि:

"इब्ने तैमिया, जो मज़हबे वहाबीयत का बानी है, उसने भी ज़हूरे महदी अ़लैहिस्सलाम के बारे में ह़दीसों को क़ुबूल किया है।"

मज़्कूरा रेसाले का मत्न हेजाज़ के पाँच मशहूर उ़लमा ने मिलकर जुस्तुजू, जद-ओ-जेहद, मुस्तनद मआख़ज़, वग़ैरह के साथ जो कुछ तह़रीर किया है वोह हम क़ारेईन के लिए ज़ैल में नक़्ल करने की सआ़दत ह़ासिल करने जा रहे हैं:

"दुनिया में फ़ित्ना-ओ-फ़साद के ज़हूर और कुफ़्र-ओ-ज़ुल्म के फैल जाने पर ख़ुदावन्द आ़लम उसे महदी अ़लैहिस्सलाम के ज़रीए़ अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से भर देगा, इस तरह मअ़्मूर कर देगा जिस तरह ज़ुल्म-ओ-जौर से भरी होगी। उसके ज़हूर का मक़ाम मक्का बयान किया गया है। वोह उन बारह ख़ुलफ़ाए राशेदीन में से होगा जिनके मुतअ़ल्लिक़ पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की ह़दीसें कुतुबे सेहाह़ में ज़िक्र की गई हैं। महदी अ़लैहिस्सलाम से मर्बूत अह़ादीस बहुत से सह़ाबा ने पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे

व आलेही व सल्लम से नक़्ल की हैं। उन सहाबए केराम में से चन्द के नाम येह हैं :

(१) उस्मान बिन अफ़्फ़ान (२) अली इब्ने अबी तालिब अलैहेमस्सलाम (३) तल्हा बिन उबैदुल्लाह (४) अब्दुर्रहमान इब्ने औफ़ (५) फ़रह बिन एसासे सज़नी (६) अब्दुल्लाह इब्ने हारी (७) अबू हुरैरा (८) हुज़ैफ़ा बिन यमान (९) जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी (१०) अबू अमामा (११) जाबिर इब्ने माजिद (१२) अब्दुल्लाह बिन उमर (१३) अनस बिन मालिक (१४) इमरान बिन हसीन (१५) ज़ौजए रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम जनाब उम्मे सलमा अलैहस्सलाम भी शामिल हैं।

येह अफ़राद उन सहाबा में से हैं जिन्होंने रवायाते महदी को नक़्ल किया है और इनके अलावा भी बहुत से अफ़राद मौजूद हैं।

ख़ुद सहाबा से भी बहुत सी बातें मन्क़ूल हैं। जिनमें ज़हूरे महदी अलैहिस्सलाम से मुतअल्लिक़ गुफ़्तुगू की गई है जिन्हें अहादीसे पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के हम पल्ला क़रार दिया जा सकता है। क्योंकि येह मसअला ऐसे मसाएल में से नहीं जिसके बारे में इज्तेहाद के ज़रीए कुछ कहा जा सके। लेहाज़ा ज़ाहिर है कि येह बातें भी उन्होंने पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम से सुन कर ही कही हैं।

मज़ीद लिखा है :

"मज़्कूरा बाला अहादीस जो पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम से नक़्ल हुई हैं और सहाबा की गवाही जो यहाँ हदीस का हुक्म रखती है बहुत सी मशहूर इस्लामी किताबों में और अहादीस की बुनियादी किताबों में आई हैं। चाहे वोह सुनन-ओ-मआजिम हों या मसानीद, इन में से :

(१) सुनने अबू दाऊद (२) सुनने तिर्मिज़ी (३) इब्ने उमर वालेदानी (४) मुस्नद अहमद बिन हंबल (५) मुस्नद इब्ने यअ्ला-ओ-बज़्ज़ाज़ (६) मुस्तदरकुल सहीहैन हाकिम नेशापूरी (७) मआजिमे तबरानी कबीर व मुतवस्सित (८) रूयानी-ओ-दार क़ुत्नी (९) अख़बारुल महदी अबू नईम (१०) तारीख़े ख़तीबे बग़दादी (११) तारीख़े इब्ने असाकिर (१२) तारीख़े दमिश्क़ और इनके अलावा दीगर उलमा की किताबों में येह रवायात मौजूद हैं।"

इसके बअ्द मज़ीद लिखा है :

"बअ्ज़ उलमाए इस्लाम ने इस बारे में मख़्सूस किताबें तालीफ़ की हैं जिनमें से :

(१) अबू नईम की अख़बारुल महदी (२) इब्ने हजर हैसमी की अल क़ौलुल मुख़्तसर फ़ी अलामातिल महदी अल मुन्तज़र (३) शूकानी की अत्तौज़ीह फ़ी तवातुर मा जाअ फ़िल मुन्तज़र वद्दज्जाल वल मसीह (४) इदरीस इराक़ी मग़रिबी की अल महदी (५) अबुल अब्बास इब्ने अब्दुल मोअ्मिन अल मग़रिबी की अल वहमुल मकनून फ़िल रद्दे अला इब्ने ख़ल्दून शामिल हैं।

(एक तहक़ीक़ के मुताबिक़ आज से चन्द साल पहले तक हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम पर २०६८ किताबें लिखी जा चुकी हैं।)

(किताबनामा इमाम महदी अलैहिस्सलाम)

और आख़री शख़्स जिसने इस सिलसिले में मुफ़स्सल बहस की है वोह इस्लामी यूनिवर्सिटी मदीना का सरबराह है जिसने मज़्कूरा यूनिवर्सिटी के मजल्लात के चन्द शुमारों में इस मसअले पर बहस की है।"

मज़ीद लिखा है :

"क़दीम और जदीद बुज़ुर्गान और उलमाए इस्लाम की एक जमाअत ने भी अपनी तहरीरों में तस्रीह की है कि महदी अलैहिस्सलाम के सिलसिले में अहादीस हद्दे तवातुर तक पहुँचती है (और वोह किसी तरह से क़ाबिले इन्कार नहीं हैं)। इन में से:

(१) अल सख़ावी ने किताब "फ़त्हुल मुग़ीस" में (२) मोहम्मद बिन अहमद सफ़ारीनी ने "शर्हुल अक़ीदा" में (३) हाफ़िज़ जलालुद्दीन सूयूती ने "अल हावी" में (४) इदरीस इराक़ी ने अल महदी में (५) शूकानी ने "अत्तौज़ीह फ़ी तवातुर मा जाअ फ़िल मुन्तज़र" में (६) मोहम्मद जअ्फ़र कुतानी ने "नज़्मुत्तनासुर" में और (७) अबुल अब्बास इब्ने अब्दुल मोअ्मिन ने "अल वहमुल मकनून".....में अक़ीदए महदवीयत पर ख़ास बहस की है।"

इस बहस के आख़िर में लिखा गया है:

"सिर्फ़ इब्ने ख़लदून है जिसने चाहा है कि महदी अलैहिस्सलाम से मर्बूत अहादीस पर एक बेबुनियाद और जअ्ली हदीस के सहारे एअ्तेराज़ करे और वोह जअ्ली हदीस है: "ला अल महदी इल्ला ईसा" (ईसा अलैहिस्सलाम के अलावा कोई भी महदी नहीं है)। लेकिन अइम्मा अलैहिमुस्सलाम और बुज़ुर्ग उलमाए इस्लाम ने उसके क़ौल को रद्द किया है ख़ुसूसन इब्ने अब्दुल मोअ्मिन ने किताब "अल वहमुल मकनून फ़िर्द्दे अला इब्ने ख़लदून" में जो तीस साल पहले मशरिक-ओ-मग़रिब में फैल चुकी है। हुफ़्फ़ाज़े अहादीस और बुज़ुर्ग उलमाए हदीस ने भी तस्रीह की है कि महदी अलैहिस्सलाम के बारे में रवायात सहीह और हसन अहादीस पर मुश्तमिल हैं और उनका मज्मूआ मुतवातिर है। इसलिए ज़हूरे महदी अलैहिस्सलाम का अक़ीदा रखना (हर मुसलमान पर) वाजिब है और येह अह्ले सुन्नत वल जमाअत के अक़ाएद का जुज़ शुमार होता है और सिवाए नादान, जाहिल या बदअक़्ल अफ़राद के इसका कोई इन्कार नहीं करता।"

- मोहम्मद मुन्तसिर कुतानी, मुदीर, इदारए मज्मए फ़िक़्हीये इस्लाम

क़ारेईने केराम! येह था राबेतए आलमे इस्लाम का मुस्तनद जवाब जो आप लोगों ने मुलाहेज़ा फ़रमाया। हम ज़रूरी समझते हैं कि क़ारेईन को अक़ीदए महदवीयत के बारे में मुन्दर्जा ज़ैल बातों से भी आगाह कर दें:

तज़्केरए हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम कुरआन में

मुन्दर्जा ज़ैल किताबों में उन आयतों का तज़्केरा है जो हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के बारे में नाज़िल हुई हैं :

१) **"अल मोहज्जा फ़ी मा नज़ल फ़िल क़ाएमिल हुज्जा"** तालीफ़ सैयद हाशिम बहरानी (अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान) ने पहले एक सौ बीस आयतों का तज़्केरा किया है तफ़ासीरे अह्ले सुन्नत-ओ-शीआ के साथ और फिर बारह आयतों का एज़ाफ़ा किया है।

२) किताब **"बशाराते अहदैन"** के मुअल्लिफ़ मोहम्मद सादिक़ साहब ने तक़रीबन दो सौ साठ आयतों में हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के तज़्केरे का ज़िक्र किया है।

३) किताब **"अल मोअ्जमुल अहादीस अल इमामुल महदी"** के मुअल्लिफ़ ने पाँचवी जिल्द में तक़रीबन पाँच सौ से ज़्यादा आयतों में तज़्केरए इमाम महदी अलैहिस्सलाम को नक़्ल किया है।

क़ारेईन, मज़्मून की तवालत को मद्दे नज़र रखते हुए हम और ज़्यादा किताबों का तज़्केरा नहीं कर रहे हैं जिसमें आयात का तज़्केरा है।

उ़लमाए आ़म्मा की वेलादते इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम से पहले लिखी जाने वाली किताबें

इन किताबों की तअ़्दाद भी बहुत है जो बरादराने अह्ले सुन्नत और अस्हाबे अइम्मए मअ़्सूमीन अलैहिमुस्सलाम ने लिखी हैं। हम ज़ैल में चन्द का ज़िक्र करते हैं :

१) किताब "अल फ़ितन" तालीफ़ उस्तादे किताब अस्सहीह अल बुख़ारी जनाब नईम इब्ने हम्माद ने पूरी किताब हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम पर लिखी है।

२) किताब "अल मुसन्नफ़" तालीफ़ उस्तादे अहमद इब्ने हंबल जनाब इब्ने अबी शैबा दो जिल्दों में दूसरी जिल्द बनाम "किताब अल महदी"।

३) किताब "अल महदी" तालीफ़ उस्तादे बुख़ारी उ़ब्बाद इब्ने यअ़्क़ूब रवाग़नी।

४) किताब "अल मशीख़ा" तालीफ़ हुसैन इब्ने महबूब हज़रत की ग़ैबत के सौ साल पहले लिखी गई।

मुन्दर्जा बाला किताबों और दूसरी किताबों से येह नतीजा अख़्ज़ किया जा सकता है कि नऊ़ज़ोबिल्लाह अक़ीदए महदवीयत शीओं का मनगढ़त अक़ीदा या अफ़साना नहीं हैं बल्कि इस्लामी अक़ीदा है। तअज्जुब ख़ेज़ बात येह है कि मुन्दर्जा बाला किताबों में ही कम अज़ कम दो किताबें तो जनाब बुख़ारी के उस्तादों की हैं। लेकिन बुख़ारी साहब ने उन में से एक हदीस को भी अपनी सहीह में जगह नहीं दी सिवाए इस हदीस के :

"तुम्हारा क्या हाल होगा जब इब्ने मरियम (ईसा) नाज़िल होंगे और तुम्हारा इमाम तुम्हारे दरमियान होगा ?"

(बाबे नुज़ूले ईसा)

कारेईन मज़्मून के जामेअ़् हवालात के बअ़्द भी क्या कोई अक़ीदए महदवीयत को सिर्फ़ शीआ हज़रात से मन्सूब करने की जुरअत कर सकता है? अक़ीदए महदवीयत तो इतना अहम और कसरत से बयान किया हुआ अक़ीदा है कि इसके झूठे दअ़्वेदार भी मौजूद हैं और नक़ली या झूठे का बाज़ार में होना इस बात की दलील है कि अस्ल मौजूद है। हम सब की आम तौर पर और उ़लमाए केराम की मख़्सूसन ज़िम्मेदारी है कि मुख़्लिस अवाम को इस अक़ीदे से इतना रू शनास करा दें कि वोह झूठे दअ़्वेदाराने महदी मिस्ल ग़ुलाम अहमद क़ादियानी, मिर्ज़ा अली मोहम्मद बाब शीराज़ी, महदी बंगाली और महदी जौनपूरी को रद्द कर सकें। कहीं येह लोग अच्छे अच्छे स्कूल खोलकर साहेबाने रूसूख़ लोगों के बच्चों को बनाम स्कालरशिप फ़ीस में तख़फ़ीफ़ करके या मआफ़ करके साफ़-ओ-शफ़्फ़ाफ़ लेबास ज़ेबे तन करके मौसीक़ी से भरपूर कलचरल प्रोग्राम का इन्एक़ाद करके और मुफ़्त मेडिकल कैंप का इन्एक़ाद करके हमारे और आप के ईमान का सौदा न कर बैठें।

ख़ुदावन्द आलम से दुआ है कि यूसुफ़े ज़हरा अलैहेमस्सलाम के ज़हूर में तअ़्जील फ़रमाए। उनके दुश्मन अगर क़ाबिले हेदायत हैं तो हेदायत दे वरना ज़लील-ओ-रुस्वा-ओ-हलाक कर दे। आमीन।

अस्मा-ओ-अल्क़ाबे हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम

अस्मा-ओ-अल्क़ाबे हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का जानना हमारे लिए जहाँ हज़रत के साथ इज़्हारे मोहब्बत है बेनाबर आयते "ज़िल्क़ुर्बा" कि हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया अज्रे रेसालत के जवाब में कि मेरे अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम से मोहब्बत करो वही हमें हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम से नज़्दीक भी करता है और इसका न जानना न सिर्फ़ हमारा हज़रत के साथ सच्ची तअल्लुक़ात और मोहब्बत का इज़्हार करता है बल्कि दुनिया-ओ-आख़ेरत में हमारे भारी नुक़सानदेही कि तरफ़ भी इशारा है कि हम तमाम अम्बिया-ओ-औसिया के वारिस, अल्लाह की आख़री हुज्जत, वारिसे हज़रात अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम के औसाफ़ से बहुत कम वाक़िफ़ हैं जो वाक़ेअन एक ख़सारा है। अल्क़ाब दरअस्ल इन्सान के औसाफ़ की निशानदेही करते हैं और मोहब्बत करने वाले अपने महबूब की ख़ुसूसीयत को ढूँढ ढूँढकर इज़्हारे मोहब्बत में औसाफ़ को बयान करते हैं।

बुज़ुर्ग हज़रात तो बहरहाल इससे वाक़िफ़ हैं लेकिन बच्चों के लिए मिसाल देकर समझाना बात को ज़्यादा वाज़ेह कर देगा। मिसाल के तौर पर "अल वालेदुश्शफ़ीक़" यअ्नी बहुत ज़्यादा मोहब्बत करने वाला बाप, इस बात की निशानदेही करता है कि वालिद अपने बच्चों से बेपनाह मोहब्बत करते हैं। इस सिलसिले में एक फ़ित्री बात का तज़्केरा ज़रूरी है कि जब किसी को नाम के बजाए अच्छे अल्क़ाब से मुख़ातब किया जाता है तो मुख़ातब न सिर्फ़ येह कि जल्दी मुतवज्जेह हो जाता है बल्कि उसके मुतवज्जेह होने में जवाबन वोह वस्फ़ और ख़ुसूसीयत भी पाई जाती है जो सिर्फ़ नाम लेकर पुकारने पर शायद न पाई जाती। इसीलिए बच्चों का सिर्फ़ अम्मी कह कर पुकारना इतना मुअस्सिर नहीं जितना "मेरी प्यारी अम्मी" कहकर जब बच्चा बुलाता है तो दोनों बाहें माँ की खुल जाती हैं और अपने बच्चे को बाहों में लेकर प्यार करके फिर पूछती है: "बोलो बेटा!"

इस छोटे से मुक़द्दमे के साथ हमारे आज के मज़्मून के उन्वान का मक़सद मुन्दर्जा ज़ैल है:

१) हज़रत के ज़्यादा से ज़्यादा अल्क़ाब को जानना, हज़रत के औसाफ़ को जानकर अपनी मअ्रेफ़त में एज़ाफ़ा करना है।

२) उन औसाफ़-ओ-अल्क़ाब के साथ हज़रत को याद करना हज़रत से बेहतर तरीक़े से इज़्हारे मोहब्बत करना है।

३) उन अल्क़ाब के ज़रीए हज़रत को आवाज़ देकर उनकी नज़रे एनायत-ओ-करम को हासिल करना है जो दुनिया-ओ-आख़ेरत की बहुत बड़ी दौलत है।

४) इस सुन्नत पर अमल करना गोया सुन्नते परवरदिगार पर अमल करना है जिसने अपने हबीब को क़ुरआन में कभी "ताहा" तो कभी "यासीन" जैसे अल्क़ाब से मुख़ातब करके अपनी मोहब्बत-ओ-शफ़क़त का इज़्हार किया है।

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम को अल्क़ाब से याद करना इसलिए भी ज़रूरी हो गया था कि सियासी हालात की वजह से नाम लेने पर पाबन्दी थी, चाहने वालों की जान का ख़तरा था जिसकी निशानदेही हज़रत की वेलादत से पहले हज़रत के जद्दे अमजद की वेलादत के वक़्त "लौहे फ़ातेमा सलामुल्लाह अलैहा" में हज़रत की ज़िक्र "म ह म द" (मीम, हा, मीम, दाल) लिख कर ख़ुदावन्द

आलम ने कर दिया था।

क़ारेईन, मज़्मून के मुतालेआ से पहले हम अपना अपना मुहासेबा कर लें कि हमें हज़रत के कितने अल्क़ाब मअ्लूम हैं ताकि मज़्मून की एफ़ादीयत हम पर ख़ुद वाज़ेह रहे। ख़ुदावन्द आलम हमारे उलमा-ओ-मराजेअ् सालेह का साया हमारे सरों पर क़ाएम-ओ-दाएम रखे और जो इस दारे फ़ानी के सफ़र को तय करके दारे बाक़ी की तरफ़ कूच कर गए उन्हें अअ्ला दर्जात एनायत करे जिन्होंने हमें हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के छोटे छोटे मौज़ूआत की तरफ़ मुतवज्जेह किया।

येह मानी हुई बात है कि कसरते अस्मा कसरते औसाफ़ पर दलालत करते हैं और इसी तरह बिलअक्स यअ्नी कसरते औसाफ़ मूजिबे कसरते अस्मा हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम चूँकि जामेअ् जमीए औसाफ़े अम्बिया हैं और महदी आख़ेरुज़्ज़मान अलैहिस्सलाम वारिसे औसाफ़े हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम हैं लेहाज़ा वोह भी जमीए औसाफ़े अम्बिया के जामेअ् हैं। इसलिए आप अलैहिस्सलाम के अस्मा-ओ-अल्क़ाब भी बलेहाज़े कसरत औसाफ़ बहुत ही ज़्यादा हैं और हम सब का एहाता भी नहीं कर सकते।

उलमाए केराम ने इन अस्मा-ओ-अल्क़ाब को कुतुबे असमानी, आयाते क़ुरआनी, अहादीसे अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम और फ़िक़्राते ज़ियारात से अख़ज़ किया है जिनकी तअ्दाद पाँच सौ (५००) से भी ज़्यादा है। साहेबे किताब **"फ़ौज़े अकबर"** आयतुल्लाह मोहम्मद बाक़िर फ़क़ीहे ईमानी अलैहिर्रह्मा ने एक नज़्म में हज़रत के तीन सौ तेरह (३१३) अस्मा-ओ-अल्क़ाब का तज़्केरा किया है। साहेबे किताब **"नज्मुस्साक़िब"** मुहद्दिसे नूरी अलैहिर्रह्मा ने हस्बे तर्तीब हुरूफ़े तहज्जी उनके हवालों और मतालिब के साथ एक सौ अस्सी (१८०) अस्मा-ओ-अल्क़ाब का तज़्केरा किया है। और साहेबे किताब **"अस्सेरातुस्सवी फ़ी अहवालिल महदी"** आली जनाब मौलवी सैयद मोहम्मद सिब्तैन सिर्सवी अअ्लल्लाह मक़ामहू ने उर्दू में इस किताब के बाबे पन्जुम में सफ़हा ४४३ से सफ़हा ४९४ तक एक सौ बयासी (१८२) अस्मा-ओ-अल्क़ाब बा रवायात अज़ **"नज्मुस्साक़िब"** नक़्ल किया है। हम ज़ैल में उन्हीं से चन्द का तज़्केरा करने की सआदत हासिल करने जा रहे हैं:

(१) हज़रत अलैहिस्सलाम का एक नाम "अहमद" है

किताब **"कमालुद्दीन"** में जनाब शेख़ सदूक़ अलैहिर्रह्मा वर्रिज़वान ने हज़रत अमीरुल मोअ्मेनीन अलैहिस्सलाम से हदीस नक़्ल की है कि हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"मेरे फ़र्ज़न्दों में से एक आख़िर ज़माने में ज़हूर फ़रमाएगा उसके दो नाम होंगे एक पोशीदा और एक ज़ाहिर पस वोह नाम जो मख़्फ़ी है वोह "अहमद" है और ज़ाहिर "मोहम्मद" है।"

(अस्सेरातुस्सवी, स.४४३-४४४)

(२) हज़रत अलैहिस्सलाम का दूसरा नाम "अस्ल" है

शेख़ कश्शी ने अपनी किताब "अर्रेजाल" में नक़्ल किया है कि अबू जअ्फ़र बिन अहमद बिन जअ्फ़र क़ुम्मी अत्तार ने "अस्ल"(इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम) के नाम एक ख़त लिखा जिसमें अबू हामिद बिन इब्राहीम मराग़ी के औसाफ़ बयान किए, इमाम ने तौक़ीअ् में इक़रार किया और दुआएँ दीं। लेहाज़ा कुतुबे रेजाल में "अस्ल" से मुराद इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम हैं क्योंकि हज़रत ही नुफ़ूसे क़ुदसिया-ओ-मुक़द्देसा हर इल्म-ओ-ख़ैर-ओ-बरकत और फ़ैज़ान की अस्ल हैं। और दीन-ओ-दुनिया-ओ-बरज़ख़-ओ-आख़ेरत में बन्दगाने

ख़ुदा के मरजअ् और मावा और हादी और मल्जा हैं।

(अस्सेरातुस्सवी, स.४४४-४४५)

(३) "ईज़ाद शनास" और "ईज़ाद निशान"

येह भी हज़रत अलैहिस्सलाम के नाम में से एक है। शेख़ बहाई अलैहिर्रह्मा ने किताब **"कश्कोल"** में तहरीर फ़रमाया है कि फ़ारसी लोग हज़रत को इन दो नामों से याद करते हैं। यअ्नी उस आने वाले महदी को जिसके सब मुन्तज़िर हैं, जो मुजस्समए मअ्रेफ़ते ख़ुदा हैं, वोह शख़्स जो ख़ुदा की कामिल मअ्रेफ़त रखता है और लोगों को ख़ुदावन्दे मुतआल की तरफ़ रहनुमाई करता है।

(अस्सेरातुस्सवी, स.४४५)

(४) अबू सालेह

किताब **"ज़ख़ीरतुल अल्बाब"** में मज़्कूर है कि उन जनाब (हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम) की कुनियत **"अबुल क़ासिम"** और **"अबू सालेह"** है और येह कुनियत हज़रत की सहराई अरबों और बादिया नशीनों में बहुत मअरूफ़-ओ-मशहूर है और अक्सर वोह लोग अपने इस्तेग़ासों और वसीलों में हज़रत को इसी नाम से पुकारते हैं और शोअरा और उदबा क़साएद और मदाएह में ज़िक्र करते हैं। और पहले ज़माने में येह नाम हज़रत का बहुत मशहूर था। यअ्नी तमाम नेकियों की अस्ल।

(अस्सेरातुस्सवी, स.४४६)

हज़रात अइम्मा मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम ने ताकीद की है कि जिस शख़्स का नाम "मोहम्मद" हो उसे एह्तेयातन अपने बेटे का नाम क़ासिम नहीं रखना चाहिए कि शैतान वरग़लाकर महदवीयत का दअ्वा न करा दे और लोग उसको मोहम्मद अबुल क़ासिम के नाम से पुकारें। वाक़ेआते मुलाक़ाते इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की किताबों में मिलता है कि एक शख़्स मिस्र के पुल पर घी बेचा करता था (जिसके वालिद अह्ले सुन्नत से तअल्लुक़ रखते थे लेकिन वालेदा अह्ले तशीअ् से तअल्लुक़ रखती थीं।) लेहाज़ा मिस्र के गाँव गाँव क़रिया क़रिया से अपने साथियों के साथ घी जमअ् करता था। एक दफ़अ् का ज़िक्र है कि घी जमअ् करके वापसी में थकन ज़्यादा होने की वजह से एक दरख़्त से टेक लगा कर सो गया। उनके साथी उसे सोता छोड़कर चले गए। जब उनकी आँख खुली तो देखा अन्क़रीब अन्धेरा छा जाएगा, रास्ते में जंगल से गुज़रना पड़ता था। कोई अस्लहा भी साथ नहीं रखा था। माँ की नसीहत याद आई, जब भी कोई ख़तरा दरपेश आए तो दिल से एक बार कहना **"या अबा सालेह अल महदी अदरिकनी"**। कहता है जैसे ही मैंने आवाज़ दी एक शख़्स सवारी पर सवार मेरे पास आया मुझे अपनी सवारी पर बैठाया थोड़े वक़्फ़े के बअ्द मुझे इशारा किया तुम्हारा ख़तरा टल गया सामने गाँव से अपना रास्ता पा लोगे। मैंने बड़ी ख़ुशामद की आप भी चलिए उन्होंने कहा: "नहीं, तुम जाओ मुझे मेरे दूसरे चाहने वालों की मदद के लिए पहुँचना है।" जब वोह येह बोल कर चले गए तब मुझे एहसास हुआ हाए मैंने क्या किया, पाकर भी अपने मोहसिन को खो दिया।

(५) अमीरुल ओमरा

सेक़ते जलील "फ़ज़्ल बिन शाज़ान" ने किताब **"ग़ैबत"** में हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से हदीस नक़्ल की है कि हज़रत अमीरुल मोअ्मेनीन अलैहिस्सलाम ने बअ्दे ज़िक्रे फ़ेतन और हुरूब और आशोब के फ़रमाया कि दज्जाल आएगा और लोगों को गुमराह और इज़्लाल करने में सख़्त कोशिश करेगा। उस वक़्त ऐ हुसैन तेरा नवाँ फ़र्ज़न्द जो "अमीरुल ओमरा" और "क़ातेलुल कुफ़्रह" और सुलताने मामूल जिसकी ग़ैबत में उक़ूल मुतहय्यर होंगी रुक्न-ओ-मक़ाम के दरमियान ज़ाहिर होगा और जिन्न-ओ-इन्स पर ग़ल्बा पाएगा और वोह सब बादशाहों का बादशाह है।

(अस्सेरातुस्सवी, स.४४७)

क़ारेईन, ज़माने ग़ैबत में भी वोह बअ्द अज़ ख़ुदावन्द आलम "मुक़ल्लेबुल क़ुलूब" हैं और अपने चाहने वालों की मदद तमाम बादशाहों और सलातीन के शर से बचने के लिए किया करते हैं।

(६) बक़ीयतुल्लाह

"बक़ीयतुल्लाह" हज़रत के मशहूर अल्क़ाब में से है जिसका तज़्केरा अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने क़ुरआन करीम में सूरह हूद की आयत नंबर ८६ में किया है।

(अ) किताबे ग़ैबत में फ़ज़्ल इब्ने शाज़ान ने हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के अहवाल नक़्ल किए हैं कि हज़रत ने फ़रमाया कि जब वोह ज़हूर फ़रमाएँगे तो दीवारे ख़ानए कअ्बा से टेक लगाकर खड़े होंगे हज़रत के इर्द गिर्द तीन सौ तेरह (३१३) अस्हाब जमअ् होंगे पस हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम सबसे पहले सूरए हूद की इस आयत की तिलावत फ़रमाएँगे:

"अल्लाह का बक़ीया तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम मोअ्मिन हो तो।"

फ़रमाएँगे: "मैं हूँ बक़ीयतुल्लाह, मैं हूँ हुज्जतुल्लाह (अल्लाह की हुज्जत) और मैं ही हूँ ख़लीफ़तुल्लाह (रूए ज़मीन पर अल्लाह की ख़लीफ़ा)। पस नहीं सलाम करेगा हज़रत को कोई शख़्स मगर इन अल्फ़ाज़ में **"अस्सलामो अ़लैका या बक़ीयतल्लाहे फ़ी अर्ज़ेह"(सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के सबसे बेहतर बाक़ी उसकी सरज़मीन पर)।"**

(अस्सेरातुस्सवी, स.४४७)

(ब) दूसरी रवायतों में इस आयत के ज़ैल में मिलता है कि हज़रत जब येह एअ्लान करेंगे तो दुनिया के तमाम लोग इसे अपनी अपनी जगह पर अपनी अपनी ज़बान में सुनेंगे और लब्बैक कह कर हज़रत से बैअ़त करने के लिए आमादा हो जाएँगे। लेहाज़ा हज़रत का येह लक़ब बहुत अहम्मीयत का हामिल है और तक़रीबन तमाम मशहूर ज़ियारतों और दुआओं में येह लक़ब इस्तेअ्माल हुआ है।

(ज) "तफ़सीरे फ़ुरात" में "शेख़ फ़ुरात बिन इब्राहीम" ने इस आयत के ज़ैल में उमर इब्ने ज़ाहेर से रवायत की है कि एक शख़्स हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और अर्ज़ किया हम हज़रत इमामे क़ाएम अलैहिस्सलाम को इस तरह सलाम करते हैं "या अमीरल मोअ्मेनीन"। पस आप ने फ़रमाया: "हरगिज़ नहीं! येह एक लक़ब है जो ख़ुदावन्द आलम ने हज़रत अमीरुल मोअ्मेनीन अ़ली इब्ने अबी तालिब अलैहेमस्सलाम के लिए मुख़्तस किया है। न उन से पहले येह नाम रखा गया न उनके बअ्द कोई शख़्स इस नाम से मौसूम होगा मगर वोह शख़्स जो काफ़िर होगा।" रावी ने सवाल किया तो फिर हम किस तरह सलाम करें। इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: "तुम कहो, **"अस्सलामो अ़लैका या बक़ीयतल्लाह"** फिर इमाम अलैहिस्सलाम ने इस आयत की तिलावत फ़रमाई। अलैह

(अस्सेरातुस्सवी, स.४४७)

(७) बक़ीयतुल अम्बिया

येह नाम चन्द दीगर अल्क़ाब के साथ सैयद हुसैन मुफ़्ती करकी सिब्ते मुहक़्क़िक़े सानी ने किताब "दफ़उल मुनादात" में जनाब हकीमा सलामुल्लाह अलैहा से रवायत नक़्ल किया है कि आप की वेलादत के बअ्द ही हज़रत को हुज्जतुल्लाह, बक़ीयतुल अम्बिया, नूरुल अस्फ़िया, ग़ौसुल फ़ुक़रा, ख़ातेमुल अस्फ़िया, नूरुल अत्क़िया और साहबे कुर्रतुल बैज़ा के अल्क़ाब के ज़रीए पुकार कर कलाम करने की गुज़ारिश की गई तो आप ने **"अश्हदो अन ला एलाहा इल्लल्लाह"** और दूसरी आयात की तिलावत फ़रमाई।

(अस्सेरातुस्सवी, स.४४९)

हाफ़िज़ बुरसी ने किताब "मशारेक़ुल अनवार" में

नक़्ल किया है इस तरह कलाम करो: "ऐ हुज्जतुल्लाह, बक़ीयतुल अम्बिया, ख़ातेमुल औसिया, साहबे कुर्रतुल बैज़ा, मिस्बाहो मिनल बह्रिल अमीक़ अश्शदीदुज़्ज़ेया, ख़लीफ़तुल अत्क़िया और नूरुल औसिया। येह तमाम अस्माए मुबारक इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के लिए हैं और इनकी वज्हे तस्मिया ख़ुद इन अल्क़ाब से वाज़ेह है।

(अस्सेरातुस्सवी, स.४५०)

(८) साएर

साएर उस बदला लेने वाले को कहते हैं जो आराम न करे जब तक कि बदला न ले ले। और हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम अपने अज्दाद का ही नहीं बल्कि तमाम अम्बिया-ओ-औसिया के ख़ून का बदला लेंगे। चुनाँचे दुआए नुदबा में है:

"कहाँ है वोह अम्बिया और फ़र्ज़न्दाने अम्बिया के ख़ून का बदला लेने वाला? कहाँ है वोह मक़्तूले करबला के ख़ून का इन्तेक़ाम लेने वाला?

और बरवायत हज़रत का नअ्रा भी होगा:

"या लसारातिल हुसैन"

(९) जअ्फ़र

किताब कमालुद्दीन और ग़ैबते शेख़ तूसी अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान में हज़रत का येह लक़ब रखने की वजह येह बताई गई है कि हज़रत के चाहने वाले इसे इस्तेअ्माल करें और आपके चचा के मानने वाले इन्हें समझें और इस तरह हज़रत के चाहने वाले उसके शर से महफ़ूज़ रह सकें।

(अस्सेरातुस्सवी, स.४५१)

हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इस लक़ब की वजह येह भी बताई है कि हज़रत अलैहिस्सलाम नहरे उलूमे एलाही हैं हज़रत के ज़हूर से पहले उलूम के सिर्फ़ दो हिस्से आम होंगे, हज़रत आकर बक़िया तमाम हिस्से को आम करेंगे। जअ्फ़र "नहर" को कहते हैं।

(अस्सेरातुस्सवी, स.४५१)

(१०) दाई

हज़रत का येह लक़ब ज़ियारते आले यासीन में आया है "अस्सलामो अलै-क या दाएयल्लाह" कि आप जनाब अल्लाह की तरफ़ से दाई (दअ्वत देने वाले) हैं। मख़्लूक़ को अल्लाह की तरफ़ इस तरह दअ्वत देंगे कि दुनिया में सिवाए उनके जद्दे बुज़ुर्गवार के दीन के और कोई दीन बाक़ी नहीं रहेगा। तफ़सीरे अली इब्ने इब्राहीम क़ुम्मी में सूरह सफ़ की आयत ८ के ज़ैल में मरवी है कि ख़ुदावन्द आलम कामिल करेगा अपने नूर को क़ाएमे आले मोहम्मद के ज़रीए।

(अस्सेरातुस्सवी, स.४५७)

(११) साअ़त

येह लक़ब हज़रत का क़यामत के लिए भी इस्तेअ्माल हुआ क्योंकि येह दोनों अचानक रूनुमा होने वाले हैं। हज़रत इमाम हसन मुज्तबा अलैहिस्सलाम ने हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम से वक़्ते ज़हूर के बारे में दरियाफ़्त किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया: "अचानक होगा"। साअत यअ्नी वोह लम्हा या घंटा।

(अस्सेरातुस्सवी, स.४५८)

(१२) शरीद

"शरीद" यअ्नी जिसको दूर कर दिया गया हो, येह लक़ब हज़रात अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम ने अक्सर इस्तेअ्माल किया है। हज़रत अमीरुल मोअ्मेनीन अलैहिस्सलाम और हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने अक्सर बयान किया है। यअ्नी मख़्लूक़े नाक़द्र शनास ने हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की कुछ क़द्र न की और न उनकी मअ्रेफ़त हासिल की। ख़ुद हज़रत इमामे

ज़माना अलैहिस्सलाम ने इब्राहीम बिन अली बिन मह्ज़ियार से फ़रमाया कि मेरे वालिदे माजिद ने मुझे वसीयत की है कि: "मैं ज़मीन पर वहाँ क़याम करूँ जो नेहायत मख़्फ़ी हो ताकि मेरा हाल किसी पर ज़ाहिर न हो क्योंकि अह्ले ज़लाल मेरी अज़ीयत के दरपै हैं।"

(अस्सेरातुस्सवी, स.४५९)

(१३) ख़लफ़ व ख़लफ़े सालेह

येह लक़ब हज़रात अइम्मए मअ़्सूमीन अलैहिमुस्सलाम बार बार इस्तेअ़्माल करते थे।

(अ) हज़रत इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: "ख़लफ़े सालेह फ़र्ज़न्दे अबी मोहम्मद हसन बिन अली से है और वही साहेबुज़्ज़मान हैं और वही महदी हैं।"

(ब) *हज़रत इमाम जअ़्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: "ख़लफ़े सालेह मेरे फ़र्ज़न्दों में से है.....मुराद ख़लफ़ से जानशीन है और वोह तमाम अम्बिया और औसिया मा सलफ़ के ख़लफ़ और जानशीन हैं। और तमाम उलूम और सेफ़ात-ओ-हालात और ख़साएसे अम्बिया-ओ-औसिया से मुत्तसिफ़ हैं। और मवारीसे एलाहिया जो एक दूसरे से विरसे में पाते हैं। और तबर्रुकाते नबवीया तमाम उन जनाब के पास जमअ़ हैं। और वोह जनाब ख़लीफ़ए जमीए अम्बिया हैं।"*

(ज) चूँकि हज़रत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम कोई फ़र्ज़न्द नहीं रखते थे बस लोग कहते थे कि अब जानशीनी का सिलसिला ख़त्म हुआ। लेकिन एक जमाअत इसी एअ़्तेक़ाद पर बाक़ी रही। बस हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की वेलादत से जमाअते शीआ आपस में बशारत देते थे कि ख़लफ़ और जानशीन ज़ाहिर हुआ। उसकी तरफ़ इशारा करने के लिए ख़ुद अइम्मा अलैहिमुस्सलाम ने इस लक़ब से याद फ़रमाया।

(अस्सेरातुस्सवी, स.४५४-४५५)

(१४) ग़रीम

ग़रीम के मअ़्ना तलबगार के हैं। उलमाए रेजाल ने तस्रीह की है कि येह हज़रत के अल्क़ाबे ख़ास्सा में से है। येह लक़ब हजरत का अज़ रूए तक़य्या था कि जब चाहते थे हज़रत के वोकला हज़रत के पास माल भेजें तो इस लक़ब से पुकारते थे। शेख़ मुफ़ीद अलैहिर्रह्मा ने इर्शाद बिन मोहम्मद बिन सालेह से रवायत की है कि जब मेरे वालिद का इन्तेक़ाल हो गया और कारोबार की तमाम ज़िम्मेदारी मुझ पर आ गई तो मुझे वालिदे मरहूम के हाथ की लिखी हुई एक तहरीर मिली जिसमें जिन लोगों के पास माले ग़रीम थे, उनके नाम और रक़म दर्ज थी।

(अस्सेरातुस्सवी, स.४६२-४६३)

क़ारेईन मज़्मून की तवालत और उन्वान की वुस्अत ने बड़े पस-ओ-पेश में डाल दिया। उन्वान बहरहाल तश्ना रह गया। लेकिन उम्मीद है क़ारेईन में उन्वान के तहत और मअ़्लूमात हासिल करने का शौक़ पैदा हो गया होगा। उलमाए अख़्लाक़ ताकीद करते हैं कि हज़रत से क़रीब होने के लिए ज़रूरी है कि हर रोज़ हज़रत की ज़ियारतों में से एक ज़ियारत ज़रूर पढ़ें। सुब्ह उठते ही हज़रत की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ करें। मुस्तहब अअ़्माल हज़रत की नेयाबत में बजा लाएँ और औसाफ़ को जानते हुए हज़रत से राबेते को और मज़बूत करें और राबेता करना किसी दिन भी तर्क न करें कि सबसे ज़्यादा क़रीब सबसे जल्दी सुनने वाले, सबसे ज़्यादा मोहब्बत करने वाले, ख़ुदावन्द आलम के मुअय्यन कर्दा उसकी मख़्लूक़ के लिए हुज्जत और उसकी दी हुई क़ूवत-ओ-ताक़त से तमाम मसाएल को बहालते अहसन हल करने वाला हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम और उनके आबा-ओ-अज्दाद से बेहतर कोई नहीं। ख़ुदावन्द आलम उनके ज़हूर में जल्दी करे और हमें इन औसाफ़ के साथ हज़रत के साथ मिलकर उनकी जद्दे माजेदा और अज्दाद अलैहिमुस्सलाम का बदला लेने की तौफ़ीक़ एनायत करे।

AL-QAEM AL-MUNTAZAR, JAN 2023 TO JUN 2023, VOL. XXV, ISSUE NO. 1, RNI No. 70132/98

हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने मिम्बरे कूफ़ा पर अपने ख़ुत्बे में फ़रमाया:

ऐ अल्लाह! लाज़िम है कि तेरी ज़मीन तेरी हुज्जत से ख़ाली न रहे, जो लोगों को तेरे दीन की तरफ़ हेदायत करे और तेरे दीन की तअ़्लीम दे ताकि तेरी हुज्जत बातिल न हो और तेरे औलिया की पैरवी करने वाले गुमराह न हों जबकि उन्हें हेदायत मिल चुकी हो। येह हुज्जत ख़ाह ज़ाहिर हो जिसकी एताअ़त न की जा रही हो ख़ाह पोशीदा हो और दुश्मन उसकी ताक में हो गरचे अ़ाम दिनों में लोग शख़्सी तौर पर उनसे वाक़िफ़ न हों मगर मोअ़्मेनीन के दिल उनकी मअ़्रेफ़त, उनके आदाब-ओ-अख़्लाक़ से आबाद हैं और वोह उस पर अ़मल भी कर रहे हैं।

(कमालुद्दीन, जि.१, बाब २६, ह.११)

www.almuntazar.in

ख़त-ओ-किताबत का पता:

एसोसीएशन ऑफ़ इमाम महदी (अ.स.), पोस्ट बॉक्स न. १९८२२, मुम्बई-४०००५०

Printed, Published and Edited by Syed Mohammed Akbar Rizvi on behalf of Association of Imam Mahdi (A.S.), Published from 97/C, Bazar Road, Bandra (W), Mumbai 400050, and Printed at Gazelle Enterprise Offset Printing & Packaging, 504/A-Sussex Industrial Estate, D.K. Cross Road, Byculla, Mumbai 400 027 (M.S.)